

Time Allowed :3 Hours | Maximum Marks :100 | Total Questions :14

General Instructions

Read the following instructions very carefully and strictly follow them :

1. प्रारंभ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं ।
2. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं । दोनों खंडों के सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।

Section - A

Q1.

(क). 'भाषा योगवाशिष्ठ' के लेखक हैं :

- (A) मुंशी सदासुखलाल
- (B) रामप्रसाद 'निरञ्जनी'
- (C) राजा शिवप्रसाद सिंह
- (D) सदल मिश्र

Correct Answer : (B) रामप्रसाद 'निरञ्जनी'

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न हिंदी साहित्य के आदिकाल के गद्य साहित्य से संबंधित है । इसमें 'भाषा योगवाशिष्ठ' नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ के लेखक की पहचान करने के लिए कहा गया है ।

Step 2 : Detailed Explanation :

'भाषा योगवाशिष्ठ' खड़ी बोली गद्य की एक प्रारंभिक और महत्वपूर्ण रचना है, जिसका रचनाकाल सन् 1741 माना जाता है ।

इसके लेखक रामप्रसाद 'निरञ्जनी' थे, जो पटियाला दरबार में कथावाचक थे ।

उन्होंने यह ग्रन्थ पटियाला की महारानी को सुनाने के लिए लिखा था । [31]

इस रचना को परिमार्जित खड़ी बोली गद्य का प्रथम प्रौढ़ ग्रन्थ माना जाता है ।

अन्य विकल्प असंगत हैं क्योंकि वे खड़ी बोली गद्य के अन्य महत्वपूर्ण लेखक हैं, परन्तु उन्होंने 'भाषा योगवाशिष्ठ' की रचना नहीं की । मुंशी सदासुखलाल ने 'सुखसागर' और सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना की ।

Step 3 : Final Answer :

अतः, 'भाषा योगवाशिष्ठ' के लेखक रामप्रसाद 'निरञ्जनी' हैं ।

Quick Tip

हिंदी गद्य के चार प्रारंभिक उन्नायकों - मुंशी सदासुखलाल, इंशा अल्ला खाँ, लल्लूलाल और सदल मिश्र - के साथ-साथ रामप्रसाद निरंजनी और उनकी रचनाओं को याद रखना प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण है।

(ख). 'क्षण बोले कण मुस्काए' रचना की विधा है :

- (A) नाटक
- (B) उपन्यास
- (C) संस्मरण
- (D) निबन्ध

Correct Answer : (D) निबन्ध

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न हिंदी साहित्य की विभिन्न गद्य विधाओं की पहचान से संबंधित है। इसमें प्रसिद्ध रचना 'क्षण बोले कण मुस्काए' की साहित्यिक विधा (genre) पूछी गई है।

Step 2 : Detailed Explanation :

'क्षण बोले कण मुस्काए' के लेखक प्रसिद्ध साहित्यकार कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं।

यह रचना उनके निबंधों का एक संग्रह है। हालांकि, इसकी शैली में रिपोर्ताज और संस्मरण के तत्व भी मिलते हैं, लेकिन साहित्यिक वर्गीकरण में इसे मुख्य रूप से ललित निबंध संग्रह के रूप में जाना जाता है।

रिपोर्ताज गद्य की एक नवीन विधा है जिसमें किसी घटना का साहित्यिक और कलात्मक वर्णन किया जाता है, और यह कृति इसी शैली का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

दिए गए विकल्पों में, 'निबन्ध' सबसे उपयुक्त श्रेणी है क्योंकि रिपोर्ताज और संस्मरणात्मक लेख निबंध के व्यापक रूप के अंतर्गत आते हैं।

Step 3 : Final Answer :

अतः, 'क्षण बोले कण मुस्काए' की विधा 'निबन्ध' है।

Quick Tip

हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखकों की रचनाओं की विधा (जैसे - नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज) को याद रखना महत्वपूर्ण है। अक्सर परीक्षाओं में रचना का नाम देकर उसकी विधा पूछी जाती है।

(ग). चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' द्वारा लिखित कहानी है :

- (A) प्रणयिनी परिणय
- (B) ग्राम
- (C) सुखमय जीवन
- (D) जासूस का धोखा

Correct Answer : (C) सुखमय जीवन

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न हिंदी के प्रसिद्ध कहानीकारों और उनकी प्रमुख रचनाओं पर आधारित है। यहाँ चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कहानी को पहचानना है।

Step 2 : Detailed Explanation :

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (1883-1922) हिंदी साहित्य में एक मील का पत्थर माने जाते हैं। उन्होंने केवल तीन कहानियाँ लिखकर अपार ख्याति प्राप्त की।

उनकी तीन प्रसिद्ध कहानियाँ हैं :

1. सुखमय जीवन (1911 में 'भारतमित्र' में प्रकाशित)
 2. बुद्धू का काँटा (1914)
 3. उसने कहा था (1915), जो हिंदी की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक मानी जाती है।
- दिए गए विकल्पों में से 'सुखमय जीवन' गुलेरी जी द्वारा लिखित कहानी है।

Step 3 : Final Answer :

अतः, सही उत्तर (C) सुखमय जीवन है।

Quick Tip

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की तीनों कहानियों ('उसने कहा था', 'सुखमय जीवन', 'बुद्धू का काँटा') के नाम और उनके प्रकाशन वर्ष याद रखें। 'उसने कहा था' कहानी अपनी शिल्प-विधि और विषय-वस्तु के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है।

(घ). शुक्लयुगीन लेखक हैं :

- (A) उदयशंकर भट्ट
- (B) महावीरप्रसाद द्विवेदी
- (C) राधाचरण गोस्वामी
- (D) बालकृष्ण भट्ट

Correct Answer : (A) उदयशंकर भट्ट

Solution :**Step 1 : Understanding the Concept :**

यह प्रश्न हिंदी साहित्य के इतिहास के काल-विभाजन, विशेषकर 'शुक्ल युग' से संबंधित है। इसमें दिए गए लेखकों में से शुक्लयुगीन लेखक की पहचान करनी है।

Step 2 : Detailed Explanation :

हिंदी गद्य साहित्य में सन् 1919 से 1938 तक के काल को आचार्य रामचंद्र शुक्ल के योगदान के कारण 'शुक्ल युग' या 'छायावाद युग' कहा जाता है।

अब विकल्पों का विश्लेषण करते हैं :

(A) उदयशंकर भट्ट (1898-1966) : ये एक प्रसिद्ध नाटककार, कवि और उपन्यासकार थे। [21, 37]

इनका रचनाकाल शुक्ल युग और शुक्लोत्तर युग में आता है, अतः ये शुक्लयुगीन लेखक माने जाते हैं।

(B) महावीरप्रसाद द्विवेदी : ये 'द्विवेदी युग' (1900-1922) के प्रवर्तक थे, जो शुक्ल युग से पहले का काल है।

(C) राधाचरण गोस्वामी : ये 'भारतेन्दु युग' (1868-1900) के प्रमुख लेखक थे।

(D) बालकृष्ण भट्ट : ये भी 'भारतेन्दु युग' के एक स्तंभ माने जाते हैं।

Step 3 : Final Answer :

दिए गए विकल्पों में से केवल उदयशंकर भट्ट ही शुक्ल युग के लेखक हैं।

Quick Tip

हिंदी साहित्य के प्रमुख युगों (भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग) का कालानुक्रम और प्रत्येक युग के 4-5 प्रमुख लेखकों के नाम याद रखना परीक्षाओं के लिए अत्यंत उपयोगी है।

(ड). शुक्लोत्तर युगीन रचना है :

- (A) रेल का विकट खेल
- (B) कंकाल
- (C) गोदान
- (D) निराला की साहित्य-साधना

Correct Answer : (D) निराला की साहित्य-साधना

Solution :**Step 1 : Understanding the Concept :**

यह प्रश्न हिंदी साहित्य के 'शुक्लोत्तर युग' (छायावादोत्तर युग) की रचनाओं की पहचान से संबंधित है। शुक्लोत्तर युग का आरंभ सन् 1938 के बाद माना जाता है। [11]

Step 2 : Detailed Explanation :

आइए प्रत्येक रचना के काल का विश्लेषण करें :

(A) रेल का विकट खेल : यह बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित एक नाटक है और यह 'भारतेन्दु युग' की रचना

है।

(B) कंकाल : यह जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित उपन्यास है, जिसका प्रकाशन सन् 1929 में हुआ था। यह 'शुक्ल युग' (छायावाद युग) की रचना है।

(C) गोदान : यह मुंशी प्रेमचंद का अंतिम और सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है, जो 1936 में प्रकाशित हुआ था। यह भी 'शुक्ल युग' की एक महत्वपूर्ण रचना है।

(D) निराला की साहित्य-साधना : यह डॉ. रामविलास शर्मा द्वारा लिखी गई एक प्रसिद्ध आलोचनात्मक जीवनी है। इसका प्रकाशन तीन भागों में हुआ, जिसका प्रथम भाग 1969 में प्रकाशित हुआ। यह रचना स्पष्ट रूप से 'शुक्ल युग' (1938 के बाद) की है।

Step 3: Final Answer :

अतः, 'निराला की साहित्य-साधना' एक शुक्ल युगीन रचना है।

Quick Tip

महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियों के प्रकाशन वर्ष को याद रखने से आपको उनके युग का निर्धारण करने में आसानी होती है। विशेषकर प्रेमचंद, प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा जैसे लेखकों की प्रमुख रचनाओं के प्रकाशन वर्ष पर ध्यान दें।

Q2.

(क). 'एकान्तवासी योगी' कविता के रचनाकार हैं :

- (A) बालमुकुन्द गुप्त
- (B) अयोध्याप्रसाद खत्री
- (C) श्रीधर पाठक
- (D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer : (C) श्रीधर पाठक

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के एक महत्वपूर्ण कवि और उनकी रचना से संबंधित है। 'एकान्तवासी योगी' खड़ी बोली हिन्दी की प्रारंभिक महत्वपूर्ण रचनाओं में से एक है।

Step 3 : Detailed Explanation :

'एकान्तवासी योगी' की रचना श्रीधर पाठक ने सन् 1886 में की थी। यह गोल्डस्मिथ की अंग्रेजी रचना 'द हरमिट' (The Hermit) का खड़ी बोली में किया गया काव्यानुवाद है। श्रीधर पाठक को खड़ी बोली हिन्दी के प्रथम समर्थ कवियों में गिना जाता है और उन्होंने प्रकृति चित्रण तथा देशभक्ति की कविताओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अन्य विकल्प असंगत हैं क्योंकि बालमुकुन्द गुप्त और अयोध्याप्रसाद खत्री इस रचना से संबंधित

नहीं हैं ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, 'एकान्तवासी योगी' कविता के रचनाकार श्रीधर पाठक हैं ।

Quick Tip

हिन्दी साहित्य में प्रमुख अंग्रेजी काव्यों के अनुवाद और उनके अनुवादकों के नाम अक्सर प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे जाते हैं । गोल्डस्मिथ की रचनाओं 'द हरमिट', 'द डेजर्टेड विलेज' और 'द ट्रैवलर' के श्रीधर पाठक द्वारा किए गए अनुवाद (क्रमशः 'एकान्तवासी योगी', 'उजड़ ग्राम', 'श्रान्त पथिक') विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं ।

(ख). द्विवेदी युग के कवि हैं :

- (A) केदारनाथ अग्रवाल
- (B) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
- (C) रामनरेश त्रिपाठी
- (D) नरेश मेहता

Correct Answer : (C) रामनरेश त्रिपाठी

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न हिन्दी साहित्य के 'द्विवेदी युग' (लगभग 1900-1920 ई.) से संबंधित है । इस युग का नामकरण आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर हुआ । इस युग के कवियों की पहचान करना आवश्यक है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

दिए गए विकल्पों में से रामनरेश त्रिपाठी द्विवेदी युग के एक प्रमुख कवि हैं । उनकी रचनाओं 'मिलन', 'पथिक', और 'स्वप्न' में राष्ट्रीयता और सुधारवाद की भावना प्रमुख है, जो द्विवेदी युग की मुख्य प्रवृत्तियाँ थीं ।

अन्य विकल्पों पर विचार करें :

- केदारनाथ अग्रवाल : ये प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं ।
- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : ये तीसरे सप्तक के कवि हैं और प्रयोगवाद तथा नई कविता से संबंधित हैं ।
- नरेश मेहता : ये दूसरे सप्तक के कवि हैं और प्रयोगवादी काव्यधारा से जुड़े हैं ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, दिए गए विकल्पों में से रामनरेश त्रिपाठी द्विवेदी युग के कवि हैं ।

Quick Tip

हिन्दी साहित्य के विभिन्न युगों (जैसे- भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद) के प्रमुख कवियों और उनकी प्रवृत्तियों की एक सूची बनाकर याद करना परीक्षाओं के लिए बहुत उपयोगी होता है । सप्तक (तार सप्तक, दूसरा सप्तक, आदि) के कवियों को विशेष रूप से ध्यान में रखें ।

(ग). 'बादल को घिरते देखा है' नागार्जुन की कविता का युग है :

- (A) प्रयोगवाद
- (B) छायावाद
- (C) द्विवेदी युग
- (D) प्रगतिवाद

Correct Answer : (D) प्रगतिवाद

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रसन्न प्रसिद्ध कवि नागार्जुन और उनकी कविता के साहित्यिक युग से संबंधित है । नागार्जुन हिन्दी साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं और उनकी काव्य-धारा को पहचानना महत्वपूर्ण है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

बाबा नागार्जुन (वैद्यनाथ मिश्र) हिन्दी साहित्य में प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं । उनकी कविताओं में शोषितों, पीड़ितों और आम जनता के प्रति गहरी सहानुभूति और सामाजिक विषमता पर तीव्र प्रहार देखने को मिलता है । 'बादल को घिरते देखा है' उनकी प्रसिद्ध कविताओं में से एक है, जिसमें प्रकृति के मनोहारी चित्रण के साथ-साथ जन-जीवन की झलक भी मिलती है । यह कविता उनके काव्य संग्रह 'युगधारा' (1953) में संकलित है । उनकी रचनाएँ स्पष्ट रूप से प्रगतिवादी चेतना को दर्शाती हैं ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, 'बादल को घिरते देखा है' नागार्जुन की कविता का युग प्रगतिवाद है ।

Quick Tip

प्रगतिवाद को मार्क्सवादी दर्शन का साहित्यिक संस्करण माना जाता है। इस धारा के प्रमुख कवियों में नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन और मुक्तिबोध (आरंभिक दौर में) का नाम प्रमुख है। इनकी कविताओं के मुख्य विषय सामाजिक यथार्थ, शोषण का विरोध और क्रांति का आह्वान हैं।

(घ). प्रयोगवाद के प्रवर्तक हैं :

- (A) अज्ञेय
- (B) मैथिलीशरण गुप्त
- (C) सुमित्रानन्दन पन्त
- (D) निराला

Correct Answer : (A) अज्ञेय

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न हिन्दी साहित्य के 'प्रयोगवाद' नामक काव्य-आंदोलन और उसके प्रवर्तक से संबंधित है।

Step 3 : Detailed Explanation :

हिन्दी कविता में 'प्रयोगवाद' का प्रारंभ सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा संपादित 'तार सप्तक' के प्रकाशन (1943 ई.) से माना जाता है। अज्ञेय को ही प्रयोगवाद का प्रवर्तक या जनक कहा जाता है। उन्होंने नए बिम्बों, प्रतीकों, उपमानों और शिल्पगत नवीनता पर बल दिया।

अन्य विकल्पों पर विचार करें :

- मैथिलीशरण गुप्त : ये द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि हैं।
- सुमित्रानन्दन पन्त : ये छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं।
- निराला (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला') : ये भी छायावाद के प्रमुख स्तंभ हैं।

Step 4 : Final Answer :

अतः, प्रयोगवाद के प्रवर्तक 'अज्ञेय' हैं।

Quick Tip

'तार सप्तक' के प्रकाशन को प्रयोगवाद की शुरुआत का महत्वपूर्ण बिंदु माना जाता है। अज्ञेय ने कुल चार सप्तकों का संपादन किया, जिनके प्रकाशन वर्ष और कवि प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

(ड). 'तारसप्तक' का प्रकाशन वर्ष है :

- (A) 1959
- (B) 1936
- (C) 1951
- (D) 1943

Correct Answer : (D) 1943

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न हिन्दी साहित्य के एक युगांतरकारी काव्य-संग्रह 'तारसप्तक' के प्रकाशन वर्ष से संबंधित है, जिसने 'प्रयोगवाद' की नींव रखी।

Step 3 : Detailed Explanation :

'तारसप्तक' एक काव्य संग्रह है जिसका संपादन अज्ञेय ने किया था। इसका प्रकाशन सन् 1943 ई. में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा किया गया था। इसमें सात कवियों (अज्ञेय, मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, भारत-भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर और रामविलास शर्मा) की कविताएँ संकलित थीं। इसी संग्रह के प्रकाशन से हिन्दी साहित्य में प्रयोगवाद का आरंभ माना जाता है।

अन्य विकल्प और उनके महत्व :

- **1951 :** इस वर्ष 'दूसरा सप्तक' का प्रकाशन हुआ।
- **1959 :** इस वर्ष 'तीसरा सप्तक' का प्रकाशन हुआ।
- **1936 :** यह वर्ष प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना के लिए महत्वपूर्ण है, जिससे प्रगतिवाद का आरंभ माना जाता है।

Step 4 : Final Answer :

अतः, 'तारसप्तक' का प्रकाशन वर्ष 1943 है।

Quick Tip

चारों सप्तकों के प्रकाशन वर्ष याद रखना महत्वपूर्ण है :

- तार सप्तक : 1943
- दूसरा सप्तक : 1951 (8 वर्ष बाद)
- तीसरा सप्तक : 1959 (8 वर्ष बाद)
- चौथा सप्तक : 1979 (20 वर्ष बाद)

गद्यांश 1 पर आधारित प्रश्न

दिये गए गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिये ।

वीरेंद्रनाथ ने इस भारतवर्ष को 'महानत्मसूक्त' कहा है । विष्णु देश है यह ! अर्थात् आये, आये, शक्ति आये, हों आये, नग आये, क्षण आये, गन्ध आये - न जाने कितनी मानव जातियाँ यहाँ आयी और आज के भारतवर्ष के बनाने में अपना हाथ लगायी । जिसे हम हिन्दू नीति-नीति कहते हैं, ये उनके आय और आयुक्त उत्पादनों के अद्भुत मिश्रण है । चिक-एक पशु और एक पक्षी न जाने कितनी मूर्तियों का भार लेकर हमारे सामने उपस्थित हैं । उनका की भी अपनी स्मृति-परंपरा है । आम की भी, मच्छुल की भी, चमच की भी ! सब क्या हमें मालूम है ?

(i). उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

Correct Answer : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'अशोक के फूल' नामक निबन्ध से उद्धृत है ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

सन्दर्भ लिखने का अर्थ है गद्यांश के स्रोत का उल्लेख करना, जिसमें पाठ का शीर्षक और उसके लेखक का नाम शामिल होता है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

यह गद्यांश प्रसिद्ध निबन्धकार और आलोचक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के ललित निबन्ध 'अशोक के फूल' से लिया गया है । इस पाठ में लेखक ने भारतीय संस्कृति की विविधता और समन्वयवादी भावना पर प्रकाश डाला है, जिसकी झलक इस गद्यांश में स्पष्ट रूप से मिलती है ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, इस गद्यांश का उपयुक्त सन्दर्भ है - पाठ का नाम : अशोक के फूल, तथा लेखक का नाम : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ।

Quick Tip

परीक्षा में गद्यांश का सन्दर्भ लिखते समय लेखक का नाम और पाठ का शीर्षक स्पष्ट रूप से लिखना अनिवार्य है। यदि आप लेखक के बारे में एक संक्षिप्त परिचयात्मक पंक्ति जोड़ सकें तो यह आपके उत्तर को और प्रभावी बना सकता है।

(ii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

रेखांकित अंश : जिसे हम हिन्दू रीति-नीति कहते हैं, वे अनेक आर्य और आर्येतर उपादानों का अद्भुत मिश्रण है।

Correct Answer : लेखक के अनुसार, भारत की वर्तमान हिन्दू संस्कृति और उसके रीति-रिवाज किसी एक जाति की देन नहीं हैं, बल्कि यह उन अनेकों आर्य और गैर-आर्य (जैसे शक, हूण, नाग) जातियों के सांस्कृतिक तत्वों का एक अद्भुत और सामंजस्यपूर्ण मिश्रण है जो समय के साथ भारत में आकर बस गईं।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

इस प्रश्न में गद्यांश के रेखांकित वाक्य का भावार्थ स्पष्ट करने के लिए कहा गया है। इसका उद्देश्य यह समझाना है कि हिन्दू संस्कृति का स्वरूप कैसे बना।

Step 3 : Detailed Explanation :

लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी इस पंक्ति में कहते हैं कि जिन परम्पराओं, रीति-रिवाजों और जीवन-शैलियों को हम आज 'हिन्दू संस्कृति' के नाम से जानते हैं, वह शुद्ध रूप से केवल आर्यों की संस्कृति नहीं है।

इसका निर्माण भारत में आने वाली अनेकों जातियों, जैसे- आर्य, शक, हूण, नाग, यक्ष आदि के सांस्कृतिक उपादानों (रीति-रिवाज, विश्वास, परम्पराएं) के आपसी मेल-जोल से हुआ है।

यह संस्कृति एक महानदी की तरह है जिसमें अनेकों छोटी-बड़ी नदियाँ (विभिन्न जातियाँ) आकर मिलती गईं और अपनी पहचान को बनाए रखते हुए भी एक विशाल एकीकृत धारा का निर्माण करती गईं।

इसलिए, हिन्दू रीति-नीति एक 'अद्भुत मिश्रण' है क्योंकि इसमें अनेक विविध संस्कृतियों के तत्व घुल-मिल गए हैं।

Step 4 : Final Answer :

अतः, रेखांकित अंश का आशय यह है कि भारतीय हिन्दू संस्कृति एक मिश्रित या समन्वित संस्कृति है, जिसका विकास विभिन्न आर्य और गैर-आर्य जातियों के पारस्परिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान से हुआ है।

Quick Tip

व्याख्या करते समय केवल वाक्य का शाब्दिक अनुवाद न करें। वाक्य के पीछे छिपे लेखक के गहरे अर्थ और भाव को अपने शब्दों में विस्तार से समझाएं। गद्यांश के अन्य हिस्सों से संदर्भ लेकर अपनी व्याख्या को और पुष्ट करें।

(iii). रवीन्द्रनाथ ने किसे 'महामानवसमुद्र' कहा है ?

Correct Answer : रवीन्द्रनाथ ने भारतवर्ष को 'महामानवसमुद्र' कहा है।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न गद्यांश की पहली पंक्ति पर आधारित एक तथ्यात्मक प्रश्न है।

Step 3 : Detailed Explanation :

गद्यांश का प्रारम्भ इसी वाक्य से होता है: "रवीन्द्रनाथ ने इस भारतवर्ष को 'महामानवसमुद्र' कहा है।"

इसका कारण यह है कि जिस प्रकार समुद्र में अनगिनत नदियाँ आकर मिल जाती हैं और अपना अलग अस्तित्व खोकर एकाकार हो जाती हैं, उसी प्रकार भारतवर्ष में भी अनगिनत मानव जातियाँ (असुर, आर्य, शक, हूण आदि) आकर बस गईं और यहाँ की संस्कृति में घुल-मिलकर एक हो गईं।

Step 4 : Final Answer :

अतः, रवीन्द्रनाथ ने भारतवर्ष को ही 'महामानवसमुद्र' की संज्ञा दी है।

Quick Tip

गद्यांश आधारित प्रश्नों के उत्तर अक्सर गद्यांश में ही सीधे तौर पर मिल जाते हैं। प्रश्न को ध्यान से पढ़ें और गद्यांश में संबंधित पंक्ति को खोजें।

(iv). भारतवर्ष के निर्माण में किन-किन जातियों का सहयोग रहा है ?

Correct Answer : गद्यांश के अनुसार, भारतवर्ष के निर्माण में असुर, आर्य, शक, हूण, नाग, यक्ष, गन्धर्व आदि अनेक मानव जातियों का सहयोग रहा है।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न गद्यांश में दी गई जानकारी के आधार पर उन जातियों की सूची बनाने के लिए कहता है

जिन्होंने भारतीय संस्कृति के निर्माण में योगदान दिया ।

Step 3 : Detailed Explanation :

गद्यांश की दूसरी और तीसरी पंक्ति में स्पष्ट रूप से लिखा है : "असुर आये, आर्य आये, शक आये, हूण आये, नाग आये, यक्ष आये, गन्धर्व आये – न जाने कितनी मानव जातियाँ यहाँ आयीं और आज के भारतवर्ष को बनाने में अपना हाथ लगा गईं ।"

यह सूची उन प्रमुख जातियों को दर्शाती है जिनका उल्लेख लेखक ने भारतीय संस्कृति के मिश्रित स्वरूप को सिद्ध करने के लिए किया है ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, भारतवर्ष के निर्माण में असुर, आर्य, शक, हूण, नाग, यक्ष और गन्धर्व जैसी जातियों का सहयोग रहा है ।

Quick Tip

जब प्रश्न में सूची बनाने के लिए कहा जाए, तो गद्यांश में दिए गए सभी नामों को ध्यानपूर्वक और बिना किसी त्रुटि के लिखें । किसी भी नाम को छोड़ना या गलत लिखना आपके अंक कम कर सकता है ।

(v). उपर्युक्त गद्यांश का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

Correct Answer : उपर्युक्त गद्यांश का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि भारत की संस्कृति एक 'समन्वित संस्कृति' है । यह किसी एक जाति या धर्म की देन नहीं, बल्कि विभिन्न प्रजातियों और संस्कृतियों के आपसी मेल-जोल और सामंजस्य का परिणाम है । लेखक भारत की इस 'अनेकता में एकता' की विशेषता को उजागर करना चाहते हैं ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

इस प्रश्न में गद्यांश के मूल संदेश या लेखक के अभिप्राय को पृच्छा गया है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

इस गद्यांश के माध्यम से लेखक का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित बातें स्पष्ट करना है :

- **विविधता का उत्सव :** यह बताना कि भारत भूमि पर समय-समय पर अनेक मानव जातियाँ आईं और यहीं बस गईं ।
- **समन्वय की भावना :** यह दर्शाना कि इन विभिन्न जातियों ने अपनी अलग पहचान बनाए रखने के बजाय एक-दूसरे के साथ मिलकर एक साझा संस्कृति का विकास किया ।

- **संस्कृति की महानता:** भारतीय संस्कृति की महानता उसकी ग्रहणशीलता और समन्वयवादी प्रकृति में निहित है, जिसे लेखक 'महामानवसमुद्र' कहकर प्रतिष्ठित करते हैं।

संक्षेप में, लेखक यह सिद्ध करना चाहते हैं कि भारत की असली पहचान उसकी विविधता और एकता के अद्भुत संतुलन में है।

Step 4: Final Answer :

अतः, गद्यांश का उद्देश्य भारत की सांस्कृतिक विविधता और उसकी समन्वयवादी शक्ति का बखान करना है, और यह संदेश देना है कि भारतीयता का निर्माण अनेकों धाराओं के संगम से हुआ है।

Quick Tip

किसी गद्यांश का उद्देश्य समझने के लिए स्वयं से पूछें: "लेखक इस अंश के माध्यम से पाठक को क्या समझाना या महसूस कराना चाहता है?" मुख्य विचार को पहचानकर उसे अपने शब्दों में लिखें।

गद्यांश 2 पर आधारित प्रश्न

हमारी युवाशक्ति से समर्पक कार्य करने के मेरे फैसले का आधार भी यही रहा है। उनके सपनों को जानना और उन्हें बताना कि अच्छे, भरे-पूर और सुखदुःखों से पूर्ण जीवन के सपने देखना तथा फिर स्वनिर्मित युवा के लिए काम करना सही है। आप जो कुछ भी करें वह आपके हृदय से किया गया हो, अपनी आत्मा को अभिव्यक्ति दें और इस तरह आप अपने अशेषप्यार तथा दुसरो का प्रसार कर सकेंगे।

(i). उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer : प्रस्तुत गद्यांश 'मिसाइल मैन' के नाम से विख्यात, भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा लिखित 'हम और हमारा आदर्श' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ 'तेजस्वी मन के सम्पादित अंश' से लिया गया है।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

सन्दर्भ लिखने के लिए गद्यांश के पाठ और लेखक की पहचान करना आवश्यक है।

Step 3 : Detailed Explanation :

यह गद्यांश डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के विचारों को प्रस्तुत करता है, जिसमें वे युवाओं को प्रेरित कर रहे हैं। उनकी भाषा और विषय-वस्तु (युवाशक्ति, सपने, स्वर्णिम युग) उनकी विशिष्ट शैली को दर्शाती है। यह अंश उनकी पुस्तक 'इग्नाइटेड माइंड्स' (Ignited Minds) के हिन्दी अनुवाद 'तेजस्वी मन' के एक संपादित अंश 'हम और हमारा आदर्श' से लिया गया है।

Step 4 : Final Answer :

अतः, इस गद्यांश का उपयुक्त सन्दर्भ है - पाठ का नाम : हम और हमारा आदर्श, तथा लेखक का नाम : डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम।

Quick Tip

प्रमुख राष्ट्रीय विभूतियों जैसे डॉ. कलाम, महात्मा गांधी आदि के लिखे पाठों को पहचानना अपेक्षाकृत सरल होता है। उनके मूल विचारों और लेखन शैली से परिचित रहें।

(ii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

रेखांकित अंश : आप जो कुछ भी करें वह आपके हृदय से किया गया हो, अपनी आत्मा को अभिव्यक्ति दें और इस तरह आप अपने आसपास प्यार तथा खुशियों का प्रसार कर सकेंगे।

Correct Answer : लेखक डॉ. कलाम युवाओं को संदेश देते हैं कि उन्हें कोई भी कार्य बिना रुचि के या दबाव में नहीं करना चाहिए, बल्कि पूरी लगन, सच्चाई और हार्दिक इच्छा से करना चाहिए। जब व्यक्ति अपने मनपसंद कार्य को अपनी पूरी आत्मा से करता है, तो उसे स्वयं भी संतुष्टि मिलती है और उसके

उस कार्य का सकारात्मक प्रभाव उसके आसपास के वातावरण पर भी पड़ता है, जिससे समाज में प्रेम और प्रसन्नता का संचार होता है ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

इस प्रश्न में रेखांकित वाक्य का भावार्थ स्पष्ट करना है, जिसमें कार्य करने की सही भावना और उसके परिणाम पर जोर दिया गया है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

लेखक इस पंक्ति में कर्म के पीछे की भावना के महत्व पर बल दे रहे हैं :

- **हृदय से किया गया कार्य :** इसका अर्थ है कि किसी भी कार्य को पूरी निष्ठा, ईमानदारी और गहरी रुचि के साथ करना चाहिए । वह केवल एक यांत्रिक क्रिया नहीं होनी चाहिए ।
- **आत्मा को अभिव्यक्ति देना :** इसका आशय है कि हमारा कार्य हमारे सच्चे व्यक्तित्व, हमारे मूल्यों और हमारी रचनात्मकता का प्रतिबिम्ब होना चाहिए । हमें वह कार्य करना चाहिए जो हमें आंतरिक रूप से संतुष्टि दे ।
- **प्यार तथा खुशियों का प्रसार :** लेखक का मानना है कि जब कोई व्यक्ति मन से और प्रसन्न होकर कार्य करता है, तो उसकी यह सकारात्मक ऊर्जा दूसरों को भी प्रभावित करती है । एक संतुष्ट और खुश व्यक्ति ही अपने आस-पास के माहौल को प्रेमपूर्ण और आनंदमय बना सकता है ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, रेखांकित अंश का आशय यह है कि सच्चे मन और लगन से किया गया सार्थक कार्य न केवल व्यक्तिगत संतुष्टि देता है, बल्कि सामाजिक परिवेश में भी प्रेम और आनंद का संचार करता है ।

Quick Tip

व्याख्या करते समय, वाक्य के प्रत्येक खंड (जैसे 'हृदय से करना', 'आत्मा की अभिव्यक्ति', 'खुशियों का प्रसार') का अलग-अलग अर्थ स्पष्ट करें और फिर उन्हें मिलाकर एक समग्र भावार्थ प्रस्तुत करें ।

(iii). स्वर्णिम युग के लिए कार्य करना कब सही है ?

Correct Answer : गद्यांश के अनुसार, जब व्यक्ति अच्छे, भरे-पूरे और सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन के सपने देखता है, तब उन सपनों को साकार करने के लिए स्वर्णिम युग हेतु कार्य करना सही है ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न गद्यांश में दी गई एक शर्त के बारे में पूछता है कि स्वर्णिम युग के लिए काम करने की सही पृष्ठभूमि क्या है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

गद्यांश की दूसरी और तीसरी पंक्ति में लेखक स्पष्ट करते हैं : "... अच्छे, भरे-पूरे और सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन के सपने देखना तथा फिर स्वर्णिम युग के लिए काम करना सही है ।"

इसका अर्थ है कि पहले एक समृद्ध और खुशहाल जीवन की आकांक्षा या सपना देखना आवश्यक है । यही सपना व्यक्ति को एक बेहतर भविष्य (स्वर्णिम युग) के निर्माण के लिए प्रेरित करता है । सकारात्मक सपने ही सकारात्मक कार्यों की नींव हैं ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, एक समृद्ध और सुखी जीवन का सपना देखने के बाद उस सपने को हकीकत में बदलने के लिए स्वर्णिम युग हेतु कार्य करना सही है ।

Quick Tip

प्रश्न में 'कब' शब्द का प्रयोग समय या परिस्थिति को इंगित करता है । गद्यांश में उस वाक्य को खोजें जो इस परिस्थिति या शर्त का वर्णन करता हो ।

(iv). लेखक का युवा शक्ति से सम्पर्क कायम करने के फैसले का आधार क्या रहा है ?

Correct Answer : लेखक का युवा शक्ति से सम्पर्क कायम करने के फैसले का आधार युवाओं के सपनों को जानना और उन्हें यह बताना रहा है कि एक अच्छे और सुविधापूर्ण जीवन का सपना देखना और फिर उस सपने को साकार करने के लिए एक स्वर्णिम युग का निर्माण करना सही है ।

Solution :**Step 1 : Understanding the Concept :**

यह प्रश्न लेखक के युवाओं से जुड़ने के पीछे के कारण या उद्देश्य के बारे में पूछता है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

गद्यांश की पहली ही पंक्ति में लेखक अपने फैसले का आधार स्पष्ट करते हैं : "हमारी युवाशक्ति से सम्पर्क कायम करने के मेरे फैसले का आधार भी यही रहा है । उनके सपनों को जानना और उन्हें बताना कि अच्छे, भरे-पूरे और सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन के सपने देखना तथा फिर स्वर्णिम युग के लिए काम करना सही है ।"

अर्थात्, लेखक युवाओं से इसलिए जुड़ना चाहते हैं ताकि वे उनकी आकांक्षाओं को समझ सकें और उन्हें सही दिशा दे सकें, उन्हें बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने के लिए प्रेरित कर सकें ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, लेखक के फैसले का आधार युवाओं के सपनों को जानकर उन्हें एक बेहतर भविष्य के निर्माण के

लिए प्रोत्साहित करना है ।

Quick Tip

अक्सर गद्यांश के पहले या अंतिम वाक्य में उसका मुख्य विचार या लेखक का उद्देश्य छिपा होता है । उत्तर खोजते समय इन वाक्यों पर विशेष ध्यान दें ।

(v). 'अभिव्यक्ति' तथा 'प्रसार' शब्द का अर्थ बताइए ।

Correct Answer : 'अभिव्यक्ति' शब्द का अर्थ है - प्रकट करना या व्यक्त करना । 'प्रसार' शब्द का अर्थ है - फैलाना या विस्तार ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह एक शब्दार्थ-आधारित प्रश्न है जिसमें दिए गए दो शब्दों का अर्थ बताना है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

- **अभिव्यक्ति :** यह शब्द 'वि' उपसर्ग और 'अक्ति' से मिलकर बना है, जिसका मूल अर्थ होता है 'प्रकट होना' या 'स्पष्ट करना' । गद्यांश के संदर्भ में, 'आत्मा को अभिव्यक्ति दें' का अर्थ है अपने आंतरिक विचारों, भावनाओं और प्रतिभा को कर्मों के माध्यम से प्रकट करें ।
- **प्रसार :** इस शब्द का अर्थ है किसी चीज़ को फैलाना, विस्तार देना । गद्यांश के संदर्भ में, 'खुशियों का प्रसार कर सकेंगे' का अर्थ है कि आप अपने आस-पास के लोगों में खुशियाँ फैला सकेंगे, अपने आनंद को दूसरों तक पहुँचा सकेंगे ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, 'अभिव्यक्ति' का अर्थ है प्रकट करना और 'प्रसार' का अर्थ है फैलाना ।

Quick Tip

शब्द का अर्थ बताते समय, यदि संभव हो, तो गद्यांश के संदर्भ में उसका अर्थ समझाएं । इससे आपके उत्तर की गुणवत्ता बढ़ जाती है ।

पद्यांश 1 पर आधारित प्रश्न

(i). प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

Correct Answer : प्रस्तुत पद्यांश अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा रचित महाकाव्य 'प्रिय-प्रवास' से हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'पवन-दूतिका' शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

सन्दर्भ में कवि का नाम, कविता का शीर्षक और मूल काव्य-ग्रंथ का उल्लेख करना होता है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

यह पद्यांश आधुनिक हिन्दी खड़ी बोली के प्रथम महाकाव्य 'प्रियप्रवास' का अंश है । इसके रचयिता द्विवेदी युग के प्रमुख कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हैं । इस अंश में श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर राधा अपनी विरह-वेदना को पवन को दूतिका बनाकर उसके माध्यम से श्रीकृष्ण तक पहुँचाना चाहती हैं ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, इस पद्यांश का उपयुक्त सन्दर्भ है - कवि : अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', शीर्षक : पवन-दूतिका, तथा मूल ग्रंथ : प्रियप्रवास ।

Quick Tip

सन्दर्भ लिखते समय कवि और कविता के नाम को सही वर्तनी के साथ लिखना बहुत महत्वपूर्ण है । यदि आपको मूल ग्रंथ का नाम भी याद है, तो उसका उल्लेख करने से उत्तर और भी प्रभावशाली हो जाता है ।

(ii). राधा पवन-दूतिका से किसकी धूल लाने को कहती हैं ?

Correct Answer : राधा पवन-दूतिका से अपने प्रियतम श्रीकृष्ण के चरणों की धूल लाने को कहती हैं ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न पद्यांश की तीसरी पंक्ति पर आधारित एक सीधा और तथ्यात्मक प्रश्न है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

पद्यांश की पंक्ति "थोड़ी सी भी चरण-रज जो ला न देगी हमें तू ।" में 'चरण-रज' का अर्थ है 'पैरों की धूल' । यहाँ राधा पवन से कह रही हैं कि यदि तू मेरे प्रिय (श्रीकृष्ण) के चरणों की थोड़ी-सी भी धूल

मुझे लाकर नहीं देगी, तो मैं अपने दुखी मन को कैसे समझाऊँगी। इससे स्पष्ट है कि वह श्रीकृष्ण के चरणों की धूल लाने को कह रही हैं।

Step 4: Final Answer :

अतः, राधा पवन-दूतिका से श्रीकृष्ण के पाँवों की धूलि (चरण-रज) लाने के लिए कहती हैं।

Quick Tip

पद्यांश आधारित प्रश्नों का उत्तर देते समय, उत्तर को पद्यांश की पंक्तियों से प्रमाणित करने का प्रयास करें। 'चरण-रज' जैसे काव्यात्मक शब्दों का सरल अर्थ स्पष्ट कर दें।

(iii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

रेखांकित अंश : छू के प्यारे कमल-पग को प्यार के साथ आ जा। जी जाऊँगी हृदयतल में मैं तुझी को लगा के ॥

Correct Answer : इन पंक्तियों में विरहिणी राधा पवन से अनुनय करती हुई कहती हैं कि हे पवन ! यदि तू मेरे लिए और कुछ न कर सके तो केवल मेरे प्रियतम श्रीकृष्ण के कमल-रूपी चरणों को प्रेमपूर्वक स्पर्श करके मेरे पास लौट आ। मैं तुझे ही अपने हृदय से लगाकर यह अनुभव करूँगी कि मैंने अपने प्रिय के चरणों का स्पर्श कर लिया है और इसी सहारे मैं अपना जीवन धारण कर लूँगी।

Solution :

Step 1: Understanding the Concept :

इस प्रश्न में रेखांकित पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट करना है, जिसमें राधा की विरह की व्याकुलता और प्रेम की गहनता व्यक्त हुई है।

Step 3: Detailed Explanation :

राधा अपनी दूतिका पवन से अपनी अंतिम और सबसे सरल इच्छा व्यक्त करती हैं।

- **छू के प्यारे कमल-पग को प्यार के साथ आ जा :** राधा कहती हैं कि हे पवन, यदि तू मेरा संदेश नहीं दे सकती या उनके चरणों की धूल भी नहीं ला सकती, तो बस एक काम करना। मेरे प्यारे श्रीकृष्ण के कमल के समान कोमल चरणों ('कमल-पग') को मेरे प्रेम के साथ स्पर्श करना और वापस मेरे पास आ जाना।
- **जी जाऊँगी हृदयतल में मैं तुझी को लगा के :** राधा कहती हैं कि जब तू उनके चरणों को छूकर वापस आएगी, तो मैं तुझे ही अपने हृदय से लगा लूँगी। तेरे स्पर्श से मुझे ऐसा प्रतीत होगा मानो मैंने स्वयं श्रीकृष्ण को स्पर्श कर लिया हो। यह अहसास ही मुझे जीने की शक्ति देगा और मेरी विरह-वेदना को शांत करेगा।

इन पंक्तियों में राधा के प्रेम की सात्विकता और त्याग की भावना चरम पर है ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, रेखांकित अंश में राधा की यह मनोदशा व्यक्त हुई है कि प्रिय का सीधा संपर्क न सही, उनका स्पर्श करके आई पवन का संपर्क भी उनके लिए जीवनदायी सिद्ध होगा ।

Quick Tip

काव्य की व्याख्या करते समय उसमें निहित अलंकार (जैसे यहाँ 'कमल-पग' में रूपक अलंकार) और रस (वियोग श्रृंगार रस) का उल्लेख करने से आपका उत्तर अधिक परिपूर्ण होता है ।

(iv). राधा पवन-दूतिका से क्या-क्या प्रार्थना करती हैं ?

Correct Answer : राधा पवन-दूतिका से निम्नलिखित प्रार्थनाएँ करती हैं :

1. सबसे पहले वह कहती है कि जाकर श्रीकृष्ण को उनकी सारी व्यथाएँ बता दे ।
2. यदि यह संभव न हो, तो उनके पाँवों की थोड़ी-सी धूल ले आए ।
3. और यदि यह भी न हो सके, तो बस उनके कमल-समान चरणों को प्यार से छूकर वापस लौट आए ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

इस प्रश्न में पूरे पद्यांश के आधार पर राधा द्वारा पवन से की गई सभी प्रार्थनाओं को क्रमबद्ध रूप से लिखने के लिए कहा गया है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

पद्यांश का विश्लेषण करने पर राधा की प्रार्थनाओं का क्रम इस प्रकार है :

- पहली प्रार्थना : "यों प्यारे को विदित करके सर्व मेरी व्यथायें ।" - अर्थात्, मेरे प्रिय को मेरी सारी पीड़ाओं से अवगत करा दो ।
- दूसरी प्रार्थना : "धीरे-धीरे वहन करके पाँव की धूलि लाना ।" - अर्थात्, यदि संदेश नहीं दे सकती तो उनके चरणों की धूल ले आना ।
- तीसरी प्रार्थना : "छू के प्यारे कमल-पग को प्यार के साथ आ जा ।" - अर्थात्, यदि कुछ भी न ला सको तो बस उन्हें छूकर ही आ जाओ ।

यह क्रम राधा की घटती हुई अपेक्षाओं और बढ़ती हुई व्याकुलता को दर्शाता है ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, राधा पवन से अपना दुःख बताने, चरण-धूलि लाने अथवा केवल चरण स्पर्श करके लौट आने की प्रार्थना करती हैं ।

Quick Tip

जब एक से अधिक बातें पूछी जाएँ, तो उत्तर को बिंदुओं में (points) या क्रमबद्ध तरीके से लिखना बेहतर होता है । इससे उत्तर स्पष्ट और सुव्यवस्थित लगता है ।

(v). उपर्युक्त पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए ।

Correct Answer : उपर्युक्त पद्यांश का मूल भाव राधा की तीव्र विरह-वेदना और श्रीकृष्ण के प्रति उनके अनन्य एवं सात्विक प्रेम की अभिव्यक्ति है । राधा अपनी दूतिका पवन से जो भी अनुरोध करती हैं, उनमें उनकी निस्वार्थ भक्ति और प्रेम की पराकाष्ठा दिखाई देती है । प्रियतम की सन्निधि का कोई भी कण (चाहे वह चरण-धूलि हो या केवल स्पर्श) उनके लिए जीवन का आधार है ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

इस प्रश्न में पद्यांश का केंद्रीय विचार या मूल संदेश पूछा गया है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

इस पद्यांश का भावार्थ इन बिंदुओं में समझा जा सकता है :

- **विरह की तीव्रता :** राधा श्रीकृष्ण के वियोग में अत्यधिक व्यथित हैं और किसी भी तरह उनसे अपना जुड़ाव महसूस करना चाहती हैं ।
- **प्रेम की अनन्यता :** उनका प्रेम इतना गहरा है कि वे केवल श्रीकृष्ण से जुड़ी किसी वस्तु या अहसास मात्र से ही जीवन धारण करने को तैयार हैं ।
- **उदार एवं सात्विक स्वरूप :** यहाँ राधा की छवि एक सामान्य नायिका की नहीं, बल्कि एक भक्त की है, जिसके लिए प्रियतम का सान्निध्य ही सब कुछ है । उनकी प्रार्थनाओं में कहीं भी स्वार्थ का भाव नहीं है ।

कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से वियोग श्रृंगार का एक अत्यंत मार्मिक और उदात्त चित्र प्रस्तुत किया है ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, पद्यांश का समग्र भाव राधा के विरह-व्याकुल, किन्तु पवित्र और समर्पित प्रेम को दर्शाना है, जहाँ प्रिय की स्मृति और उनका अहसास ही जीने का संबल बन जाता है ।

Quick Tip

'भाव स्पष्ट कीजिए' जैसे प्रश्नों में केवल शाब्दिक अर्थ नहीं लिखना होता है । आपको कविता की आत्मा, उसके पीछे की भावना, कवि के उद्देश्य और कविता के समग्र प्रभाव को अपने शब्दों में व्यक्त करना चाहिए ।

पद्यांश 2 पर आधारित प्रश्न

(i). उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

Correct Answer : प्रस्तुत पद्यांश राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित प्रसिद्ध गीति-नाट्य 'उर्वशी' से हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'उर्वशी' शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

सन्दर्भ में कवि का नाम, कविता का शीर्षक और मूल काव्य-ग्रंथ का उल्लेख करना होता है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

यह पद्यांश ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित कृति 'उर्वशी' का एक अंश है । इसके रचयिता ओज और श्रृंगार के कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं । इस अंश में देवलोक की अप्सरा उर्वशी, मृत्युलोक के राजा पुरुरवा के समक्ष अपने अलौकिक और रहस्यमयी स्वरूप का परिचय दे रही हैं ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, इस पद्यांश का उपर्युक्त सन्दर्भ है - **कवि :** रामधारी सिंह 'दिनकर', **शीर्षक :** उर्वशी, तथा **मूल ग्रंथ :** उर्वशी ।

Quick Tip

'दिनकर' जी को 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से भी जाना जाता है । सन्दर्भ या साहित्यिक परिचय में इस तरह के विशेषणों का प्रयोग आपके उत्तर को प्रभावी बनाता है ।

(ii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

रेखांकित अंश : प्रिय ! मैं, केवल अप्सरा विश्वनर के अतृप्त इच्छा-सागर से समुद्भूत ।

Correct Answer : इन पंक्तियों में उर्वशी राजा पुरुरवा से कहती हैं कि हे प्रिय ! मैं कोई साधारण स्त्री नहीं, बल्कि एक अप्सरा हूँ । मेरा जन्म किसी माता-पिता से नहीं हुआ है, बल्कि मैं इस संसार के मनुष्यों के मन में स्थित अतृप्त (कभी न पूरी होने वाली) इच्छाओं, कामनाओं और सौंदर्य की कल्पनाओं के विशाल सागर से उत्पन्न हुई हूँ ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

इस प्रश्न में रेखांकित पंक्तियों का दार्शनिक और काव्यात्मक अर्थ स्पष्ट करना है, जिसमें उर्वशी अपने जन्म का रहस्य बताती हैं ।

Step 3: Detailed Explanation :

उर्वशी अपने स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहती हैं :

- **केवल अप्सरा :** वह जोर देकर कहती हैं कि वह मात्र एक अप्सरा हैं, जो सांसारिक बंधनों और परिभाषाओं से परे है ।
- **विश्वर के अतृप्त इच्छा-सागर से समुद्भूत :** यह पंक्ति उनके जन्म का दार्शनिक आधार बताती है । 'विश्वर' का अर्थ है संसार का मनुष्य । 'अतृप्त इच्छा-सागर' का अर्थ है मनुष्य के मन में उठने वाली अनगिनत कामनाओं, विशेषकर सौंदर्य और प्रेम की कामनाओं का महासागर । 'समुद्भूत' का अर्थ है 'उत्पन्न हुई' । अर्थात्, उर्वशी मानव मन की सौंदर्य-कल्पना का साकार रूप है । वह कोई भौतिक सत्ता नहीं, बल्कि एक विचार, एक कल्पना, एक सौंदर्य-चेतना है जो मनुष्य की कामनाओं से ही जन्मी है ।

Step 4: Final Answer :

अतः, रेखांकित अंश का आशय यह है कि उर्वशी स्वयं को मनुष्य की सौंदर्य-पिपासा और अनगिनत अधूरी इच्छाओं की साकार प्रतिमा के रूप में प्रस्तुत करती हैं ।

Quick Tip

दिनकर की कविताओं में अक्सर गहरे दार्शनिक भाव छिपे होते हैं । व्याख्या करते समय केवल सतह के अर्थ तक सीमित न रहें, बल्कि उसके प्रतीकात्मक और दार्शनिक अर्थ को भी उजागर करने का प्रयास करें ।

(iii). इस पद्यांश में उर्वशी ने किसे अपना परिचय दिया है ?

Correct Answer : इस पद्यांश में उर्वशी ने राजा पुरुरवा को अपना परिचय दिया है ।

Solution :

Step 1: Understanding the Concept :

यह प्रश्न पद्यांश के संदर्भ और पात्रों से संबंधित है ।

Step 3: Detailed Explanation :

'उर्वशी' काव्य का कथानक देवलोक की अप्सरा उर्वशी और पृथ्वी के चंद्रवंशी राजा पुरुरवा के प्रेम पर आधारित है । प्रस्तुत पद्यांश उसी प्रसंग का हिस्सा है जहाँ उर्वशी राजा पुरुरवा के पृच्छने पर अपने अलौकिक स्वरूप का वर्णन करती हैं । पद्यांश में 'प्रिय ! संबोधन का प्रयोग भी इसी ओर संकेत करता है कि वह अपने प्रेमी (पुरुरवा) से बात कर रही हैं ।

Step 4: Final Answer :

अतः, उर्वशी अपना परिचय राजा पुरुरवा को दे रही हैं ।

Quick Tip

किसी भी पद्यांश को समझने के लिए उसके प्रसंग (context) को जानना आवश्यक है। यह जानने का प्रयास करें कि कविता में कौन किससे और क्यों बात कर रहा है।

(iv). आकाश में उड़ती हुई स्वच्छ आनन्द की शिखा कौन है ?

Correct Answer : आकाश में उड़ती हुई स्वच्छ आनन्द की शिखा स्वयं उर्वशी है।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न पद्यांश की दूसरी पंक्ति में प्रयुक्त एक उपमा के बारे में है।

Step 3 : Detailed Explanation :

पद्यांश की पंक्ति "अंबर में उड़ती हुई मुक्त आनन्द शिखा" में उर्वशी स्वयं का वर्णन कर रही हैं। वह कहती हैं कि मैं आकाश में स्वतंत्रतापूर्वक विचरण करने वाली आनंद की लौ ('आनन्द शिखा') के समान हूँ, जो किसी बंधन में नहीं बँधती। यह उनके मुक्त, अलौकिक और आनंदमयी स्वभाव को दर्शाता है।

Step 4 : Final Answer :

अतः, 'स्वच्छ आनन्द की शिखा' उर्वशी स्वयं के लिए प्रयुक्त एक विशेषण है।

Quick Tip

कविताओं में कवि अक्सर पात्रों या वस्तुओं का वर्णन करने के लिए रूपक और उपमाओं का प्रयोग करते हैं। इन काव्य-युक्तियों को पहचानना और उनका अर्थ समझना व्याख्या के लिए महत्वपूर्ण है।

(v). उपर्युक्त पद्यांश का भाव लिखिए।

Correct Answer : इस पद्यांश का मूल भाव उर्वशी के अलौकिक, रहस्यमयी और बंधनहीन स्वरूप को प्रकट करना है। वह स्वयं को किसी सांसारिक पहचान (नाम, गोत्र, इतिहास) से परे, सौंदर्य-चेतना की एक तरंग, आनंद की एक मुक्त शिखा और मनुष्य की अतृप्त कामनाओं से जन्मी एक अप्सरा के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इसके माध्यम से कवि यह दर्शाना चाहते हैं कि सौंदर्य कोई भौतिक वस्तु नहीं, बल्कि एक वायवीय, अलौकिक और मानसिक अनुभूति है।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

इस प्रश्न में पद्यांश के केंद्रीय विचार और दार्शनिक संदेश को स्पष्ट करने के लिए कहा गया है ।

Step 3 : Detailed Explanation :

इस पद्यांश के माध्यम से कवि उर्वशी के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ उजागर करते हैं :

- **पहचान-विहीनता** : वह सांसारिक बंधनों जैसे नाम, गोत्र, कुल, इतिहास ('इतिवृत्तहीन') से मुक्त है ।
- **सौंदर्य का प्रतीक** : वह केवल एक स्त्री नहीं, बल्कि 'सौन्दर्य चेतना की तरंग' है, अर्थात् सौंदर्य का मूर्त रूप है ।
- **अलौकिक सत्ता** : वह सुर, नर, किन्नर, गंधर्व आदि किसी भी ज्ञात श्रेणी में नहीं आती, वह इन सबसे परे 'केवल अप्सरा' है ।
- **मानसिक उत्पत्ति** : उसका जन्म भौतिक नहीं, बल्कि मनुष्य की अतृप्त इच्छाओं और कल्पनाओं से हुआ है ।

यह पद्यांश प्रेम और सौंदर्य के पारंपरिक दृष्टिकोण से आगे बढ़कर उसके दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक पक्ष को उद्घाटित करता है ।

Step 4 : Final Answer :

अतः, पद्यांश का समग्र भाव उर्वशी को एक भौतिक इकाई के बजाय सौंदर्य और कामना की एक अमूर्त, अलौकिक और सार्वभौमिक शक्ति के रूप में चित्रित करना है ।

Quick Tip

'भाव लिखिए' वाले प्रश्नों में, पद्यांश की मुख्य पंक्तियों का सार प्रस्तुत करते हुए कवि के दृष्टिकोण को भी शामिल करें । बताएं कि कवि इन पंक्तियों के माध्यम से क्या कहना चाहता है ।

Q.5 (a) निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए । (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)

Solution :

(i) **हजारीप्रसाद द्विवेदी** : हजारीप्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक, निबंधकार और साहित्यकार थे । उनकी रचनाएँ साहित्यिक आलोचना और हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान के रूप में मानी जाती हैं । उन्होंने भारतीय संस्कृति और साहित्य की गहरी समझ को प्रस्तुत किया । उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- "हिंदी साहित्य का इतिहास", "काव्यशास्त्र" और "भारतीय काव्यशास्त्र" ।

(ii) प्रो. जी. सुदर्शन रेड्डी : प्रो. जी. सुदर्शन रेड्डी का हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने भारतीय समाज और साहित्य को नए दृष्टिकोण से देखा। उनकी रचनाओं में सामाजिक मुद्दों को प्रमुखता से उठाया गया है। प्रमुख रचनाओं में "सामाजिक न्याय", "हिंदी समाज और साहित्य", और "भारतीय समाज की संरचना" शामिल हैं।

(iii) डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम : डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक और भारतीय राष्ट्रपति थे। उन्होंने भारतीय विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी रचनाएँ विज्ञान और शिक्षा के महत्व को उजागर करती हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- "इंडिया 2020", "विंग्स ऑफ फायर", और "फाइंडिंग फॉच्यून"।

Quick Tip

साहित्यिक परिचय लिखते समय लेखक के जीवन, उनके कार्यों और उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख करना महत्वपूर्ण होता है।

Q.5 (b) निम्नलिखित कवियों में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए। (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)

Solution :

(i) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हिरो' : अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हिरो' हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि थे। उनकी कविताएँ समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती हैं। उन्होंने हिंदी कविता को नई दिशा दी और उसे लोकप्रिय बनाया। उनकी प्रमुख रचनाओं में "दीनानाथ", "विजय रत्न", और "हिरो का गीत" शामिल हैं।

(ii) रामधारी सिंह 'दिनकर' : रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी साहित्य के महान कवि और लेखक थे। उनकी कविताएँ भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद और वीरता पर आधारित थीं। उनकी रचनाएँ समय के साथ प्रासंगिक बनीं। उनकी प्रमुख रचनाओं में "रश्मि रथी", "कुरुक्षेत्र", और "विजय पर्व" शामिल हैं।

(iii) महादेवी वर्मा : महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की प्रमुख कवि, लेखिका और निबंधकार थीं। उनकी कविताओं में गहरे मानवीय भावनाओं और जीवन की जटिलताओं का चित्रण है। उन्होंने स्त्री विमर्श पर भी ध्यान केंद्रित किया। उनकी प्रमुख रचनाएँ "स्मृति के स्वर", "यामा", और "दीपशिखा" हैं।

(iv) सुमित्रानंदन पंत : सुमित्रानंदन पंत हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि और साहित्यकार थे। उनका काव्य प्राकृतिक सौंदर्य, प्रेम और मानवता के प्रति जागरूकता पर आधारित था। उनकी प्रमुख रचनाएँ "पल्लव", "चिदंबरा", और "नदी" हैं।

Quick Tip

कवि का साहित्यिक परिचय देते समय उनकी कविताओं की विशेषताओं और उनके योगदान को संक्षिप्त रूप से व्यक्त करें।

Q.6 'पंचलाइट' कहानी का कथासार अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)

Solution :

'पंचलाइट' कहानी में एक छोटे से गाँव की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति को दर्शाया गया है। कहानी में ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों और आशाओं का चित्रण किया गया है। पंचलाइट के माध्यम से

ग्रामीणों की एकता, संघर्ष, और विकास की यात्रा को दर्शाया गया है। इस कहानी का उद्देश्य यह बताना है कि कैसे छोटे-छोटे कदम गाँवों के समग्र विकास की दिशा में सहायक हो सकते हैं।

Quick Tip

कथासार लिखते समय कहानी के मुख्य विचारों और संदेश को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करें।

Q.6 (OR) 'बहुद्द' कहानी के उद्धरण पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)

Solution :

'बहुद्द' कहानी में लेखक ने समाज की उथल-पुथल और भ्रष्टाचार पर गहरी टिप्पणी की है। कहानी में एक व्यक्ति की जीवन यात्रा को दर्शाया गया है, जो अपने सिद्धांतों और विश्वासों के साथ संघर्ष करता है। इस कहानी में समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे धन, सत्ता और नैतिकता का सम्मिलन और टकराव दिखाया गया है। लेखक का उद्देश्य यह बताना है कि सत्य और न्याय के रास्ते में आने वाली कठिनाइयाँ हमेशा चुनौतीपूर्ण होती हैं।

Quick Tip

किसी कहानी के उद्धरण पर प्रकाश डालते समय उस कथन के संदेश और उसके प्रभावों को स्पष्ट करें।

7. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्ड के एक प्रश्न का उत्तर दीजिए : (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)

(क) (i) 'त्यागपत्री' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-वर्णन कीजिए।

Solution : 'त्यागपत्री' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र एक बलशाली और निष्ठावान व्यक्तित्व का प्रतीक है। वह त्याग और समर्पण की उच्चतम शिखर तक पहुँचता है। उसके निर्णयों में दृढ़ता होती है और उसकी निष्ठा के कारण ही वह कष्टों का सामना करता है। उसका चरित्र समाज के प्रति आदर्श प्रस्तुत करता है, जहाँ आत्मोत्सर्ग और मानवता की श्रेष्ठता व्यक्त होती है।

Quick Tip

इस खण्डकाव्य के नायक का चरित्र त्याग, संघर्ष और निष्ठा के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

(क) (ii) 'त्यागपत्री' खण्डकाव्य के तीसरे सर्ग की कथा-वस्तु लिखिए।

Solution : 'त्यागपत्री' खण्डकाव्य के तीसरे सर्ग में नायक की परीक्षा का समय आता है। वह अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों में अपनी निष्ठा और सत्य के प्रति समर्पण को बनाए रखता है। इस सर्ग में समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारियाँ और चुनौतीपूर्ण संघर्षों का चित्रण है। इस सर्ग के माध्यम से काव्य में त्याग, समर्पण, और संघर्ष की गहरी भावनाओं को व्यक्त किया गया है।

Quick Tip

तीसरे सर्ग में नायक की निष्ठा और संघर्षों का चित्रण न केवल व्यक्तिगत बलिदान, बल्कि समाजिक उत्तरदायित्व को भी उजागर करता है।

(ख) (i) 'रश्मि' खण्डकाव्य का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।

Solution : 'रश्मि' खण्डकाव्य का कथानक मुख्य रूप से नायक की सामाजिक और व्यक्तिगत संघर्षों के इर्द-गिर्द घूमता है। इसमें नायक के द्वारा कष्टों का सामना करने और अपनी शक्ति को जागृत करने की प्रक्रिया का वर्णन है। यह खण्डकाव्य आत्मसाक्षात्कार और मानवता के आदर्शों की ओर अग्रसर होने की दिशा में नायक के संघर्षों को प्रस्तुत करता है।

Quick Tip

रश्मि खण्डकाव्य नायक की संघर्ष यात्रा को दर्शाता है, जिसमें आत्मसम्मान और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना दिखाई जाती है।

(ख) (ii) 'रश्मि' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण का चरित्रांक कीजिए।

Solution : 'रश्मि' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण का चरित्र एक महान योद्धा और उदार व्यक्ति के रूप में सामने आता है। वह सदैव सत्य और न्याय के पक्ष में खड़ा रहता है। कर्ण का जीवन संघर्षों और त्याग का प्रतीक है। उसने समाज के हर संघर्ष में अपने कर्तव्यों को निभाया और अंत तक निष्ठा से खड़ा रहा, इसके बावजूद उसे कोई पुरस्कार नहीं मिला।

Quick Tip

कर्ण का चरित्र त्याग, निष्ठा और आदर्शों का प्रतीक है, जो समाज और परिवार की परवाह किए बिना अपने कर्तव्यों का पालन करता है।

(ग) (i) 'स्वप्नकुमार' खण्डकाव्य के आधार पर दृश्य की ऐतिहासिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Solution : 'स्वप्नकुमार' खण्डकाव्य में दृश्य की ऐतिहासिक विशेषताएँ प्रमुख रूप से संघर्ष और क्रांति से संबंधित हैं। इसमें समय और समाज के बदलावों को प्रस्तुत करते हुए, नायक के सपनों के माध्यम से उसे अपनी यात्रा की समझ होती है। खण्डकाव्य में पुरानी परंपराओं के साथ-साथ आधुनिकता का सामना करते हुए विभिन्न संघर्षों की ऐतिहासिक विशेषताओं को व्यक्त किया गया है।

Quick Tip

स्वप्नकुमार के दृश्य ऐतिहासिक और सामाजिक बदलावों की छाया में होते हैं, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का सामंजस्य होता है।

(ग) (ii) 'स्वप्नकुमार' खण्डकाव्य के 'स्व' शब्द का कथानक लिखिए।

Solution : 'स्वप्नकुमार' खण्डकाव्य में 'स्व' शब्द का अर्थ आत्मा और आत्मसाक्षात्कार से संबंधित है। यह शब्द नायक के भीतर छिपी शक्ति और उसकी आत्मा के जागरण को व्यक्त करता है। 'स्व' शब्द नायक के व्यक्तिगत विकास, उसकी इच्छाओं, और उसके लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा का प्रतीक है।

Quick Tip

'स्व' शब्द आत्मा की गहराई और आत्मसाक्षात्कार की प्रक्रिया का प्रतीक है, जो नायक की यात्रा को स्पष्ट करता है।

(घ) (i) 'आलोकतत्त्व' खण्डकाव्य के छठे सर्ग (नमक आंदोलन) का कथानक लिखिए।

Solution : 'आलोकतत्त्व' खण्डकाव्य के छठे सर्ग में नमक आंदोलन की घटनाएँ चित्रित की गई हैं, जहाँ नायक और अन्य पात्र समाज में फैले असंतोष और अत्याचार के खिलाफ उठ खड़े होते हैं। यह सर्ग नायक के नेतृत्व में समाज के दबे-कुचले वर्ग के अधिकारों की लड़ाई को दर्शाता है, जिसमें वह आंतरिक संघर्षों और बाहरी दबावों का सामना करता है।

Quick Tip

नमक आंदोलन में नायक के नेतृत्व में सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन की प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है।

(घ) (ii) 'आलोकतत्त्व' खण्डकाव्य के आधार पर गांधीजी का चित्रण-विवरण कीजिए।

Solution : 'आलोकतत्त्व' खण्डकाव्य के आधार पर गांधीजी का चित्रण एक महान नेता और सत्य के प्रतीक के रूप में किया गया है। वह नायक के मार्गदर्शक होते हैं और उनका आदर्श स्वतंत्रता और सत्य के पथ पर चलने का होता है। गांधीजी का जीवन त्याग, अहिंसा और सत्य के प्रति अडिग विश्वास का प्रतीक है।

Quick Tip

गांधीजी का जीवन सत्य, अहिंसा और नायक के संघर्ष के प्रति समर्पण का प्रतीक है।

(च) (i) 'मुक्तिवीर' खण्डकाव्य के नायक की चरित्रक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

Solution : 'मुक्तिवीर' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र साहस, शक्ति और निष्ठा का प्रतीक है । वह अपने समाज के उत्थान के लिए संघर्ष करता है, और उसकी जीवनशैली में त्याग और समर्पण की विशेषताएँ साफ़ झलकती हैं । नायक का चरित्र देश और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारियों को निभाने की दिशा में प्रगति के प्रति प्रतिबद्ध है ।

Quick Tip

नायक का चरित्र त्याग, साहस, और समाजिक कर्तव्यों के प्रति जिम्मेदारी का आदर्श प्रस्तुत करता है ।

(च) (ii) 'मुक्तिवीर' खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखिए ।

Solution : 'मुक्तिवीर' खण्डकाव्य की कथावस्तु मुख्य रूप से नायक की सामाजिक और व्यक्तिगत संघर्षों से संबंधित है । इसमें नायक के कष्टों, बलिदानों और समाज में न्याय की स्थापना की ओर उसकी यात्रा का चित्रण है । यह खण्डकाव्य नायक के आत्म-निर्माण और समाज में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया को प्रमुखता से प्रस्तुत करता है ।

Quick Tip

मुक्तिवीर खण्डकाव्य में नायक के संघर्षों और बलिदानों का दृश्य अत्यधिक प्रेरणादायक है ।

8. (क). दिये गये संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए :
हिन्दी-संस्कृताङ्गलभाषासु अस्य समानः अधिकारः आसीत् । हिन्दी-हिन्दुहिन्दुस्थानानामुत्थाय अयं निरन्तरं प्रयत्नमकरोत् । शिक्षयैवदेशे समाजे च नवीनः प्रकाशः उदेति, अतः श्रीमालवीयः वाराणस्यां काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य संस्थापनमकरोत् । अस्य निर्माणाय अयं जनान् धनम् अयाचत् जनान् महत्यस्मिन् ज्ञानयज्ञे प्रभूतं धनमस्मै प्रायच्छन् ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

इस प्रश्न में दिए गए संस्कृत गद्यांश का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद करना है । सन्दर्भ में पाठ का नाम और उसकी मूल विषय-वस्तु का उल्लेख किया जाता है, तथा अनुवाद में संस्कृत के वाक्यों का हिन्दी में सटीक अर्थ प्रस्तुत किया जाता है ।

Step 2 : Key Formula or Approach :

अनुवाद करने का सही तरीका निम्नलिखित है :

1. सन्दर्भ लिखें : सबसे पहले, यह पहचानें कि गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ।
2. प्रसंग (वैकल्पिक) : संक्षेप में बताएं कि गद्यांश में किस विषय पर बात हो रही है ।
3. अनुवाद करें : गद्यांश के प्रत्येक वाक्य का व्याकरण और भाव के अनुसार हिन्दी में अनुवाद करें ।

Step 3 : Detailed Explanation :

सन्दर्भ :

प्रस्तुत संस्कृत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'महामना मालवीयः' नामक पाठ से उद्धृत है ।

इस अंश में लेखक ने महामना मदन मोहन मालवीय जी की भाषाओं पर पकड़ और शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान का वर्णन किया है ।

अनुवाद :

संस्कृत गद्यांश : हिन्दी-संस्कृत-इंग्लिश भाषासु अस्य समानः अधिकारः आसीत् । हिन्दी-हिन्दु-हिन्दुस्थानानामुत्थाय अयं निरन्तरं प्रयत्नमकरोत् । शिक्षयैवदेशे समाजे च नवीनः प्रकाशः उदेति, अतः श्रीमालवीयः वाराणस्यां काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य संस्थापनमकरोत् । अस्य निर्माणाय अयं जनान् धनम् अयाचत् जनान् महत्यस्मिन् ज्ञानयज्ञे प्रभूतं धनमस्मै प्रायच्छन् ।

हिन्दी अनुवाद : इनका (मालवीय जी का) हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषाओं पर समान अधिकार था ।

हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान के उत्थान के लिए इन्होंने निरन्तर प्रयत्न किया ।

शिक्षा से ही देश और समाज में नवीन प्रकाश का उदय होता है, अतः श्री मालवीय जी ने वाराणसी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की ।

इसके निर्माण के लिए इन्होंने लोगों से धन माँगा और लोगों ने भी इस महान ज्ञान-यज्ञ में इन्हें प्रचुर (बहुत अधिक) धन दिया ।

Step 4 : Final Answer :

उपरोक्त सन्दर्भ और अनुवाद ही इस प्रश्न का सम्पूर्ण उत्तर है ।

यह गद्यांश महामना मालवीय के भाषा कौशल, देश सेवा की भावना और शिक्षा के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है, जिसका परिणाम काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के रूप में सामने आया ।

Quick Tip

परीक्षा में संस्कृत गद्यांश का अनुवाद करते समय, पहले पाठ का नाम सही-सही पहचानें क्योंकि सन्दर्भ के लिए अलग से अंक निर्धारित होते हैं । अनुवाद करते समय शब्दों के विभक्ति और वचन का ध्यान रखें ताकि अर्थ सटीक हो । प्रमुख पाठों जैसे 'महामना मालवीयः', 'संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्' और 'आत्मज्ञः एव सर्वज्ञः' के गद्यांशों का विशेष रूप से अभ्यास करें ।

8. (ख). दिये गये श्लोकों में से किसी एक श्लोक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

प्रीणाति यः सुचरितैः पितरं स पुत्रो

यद्भर्तुमेव हितमिच्छति तत् कलत्रम् ।
तन्मित्रमापदि सुखे च समकिरयं यद्
एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते ॥

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

इस प्रश्न में दिए गए संस्कृत श्लोक (पद्य) का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद करना है ।
यहाँ उत्तम पुत्र, उत्तम पत्नी और उत्तम मित्र के गुणों को बताते हुए यह कहा गया है कि ऐसे सम्बन्ध
केवल भाग्यशाली या पुण्यवान लोगों को ही मिलते हैं ।

Step 2 : Key Formula or Approach :

श्लोक का अनुवाद करने के लिए निम्नलिखित चरणों का पालन करें :

1. सन्दर्भ लिखें : यह पहचानें कि श्लोक किस पाठ से लिया गया है ।
2. अन्वय (वैकल्पिक) : श्लोक के शब्दों को गद्य के क्रम में व्यवस्थित करें ताकि अर्थ निकालना सरल हो जाए ।
3. अनुवाद करें : श्लोक का भावपूर्ण और सटीक हिन्दी अनुवाद करें ।

Step 3 : Detailed Explanation :

सन्दर्भ :

प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'सुभाषितरत्नानि' नामक पाठ से उद्धृत है ।
इस श्लोक में उत्तम पुत्र, पत्नी तथा मित्र के लक्षणों को बताया गया है ।

अनुवाद :

संस्कृत श्लोक :

प्रीणाति यः सुचरितैः पितरं स पुत्रो
यद्भर्तुमेव हितमिच्छति तत् कलत्रम् ।
तन्मित्रमापदि सुखे च समकिरयं यद्
एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते ॥

हिन्दी अनुवाद :

जो अपने अच्छे चरित्र से पिता को प्रसन्न करता है, वही (सच्चा) पुत्र है ।
जो केवल अपने पति का ही हित चाहती है, वही (सच्ची) पत्नी है ।
जो विपत्ति (दुःख) और सुख में समान व्यवहार करता है, वही (सच्चा) मित्र है ।
संसार में ये तीनों (उत्तम पुत्र, उत्तम पत्नी और उत्तम मित्र) पुण्य करने वाले (भाग्यशाली) लोगों को
ही प्राप्त होते हैं ।

Step 4 : Final Answer :

उपरोक्त सन्दर्भ और अनुवाद इस प्रश्न का पूर्ण उत्तर है ।

इस श्लोक के माध्यम से यह शिक्षा दी गई है कि सच्चे और हितैषी सम्बन्ध पुण्य कर्मों का फल होते हैं और

जीवन में इनका मिलना अत्यंत दुर्लभ है ।

Quick Tip

'सुभाषितरत्नानि' पाठ परीक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है । इस पाठ के सभी श्लोकों का अर्थ अच्छी तरह समझ लें । श्लोक का अनुवाद करते समय शब्दों के सही अर्थ के साथ-साथ उसके भाव को भी पकड़ने का प्रयास करें । परीक्षा में केवल अनुवाद न लिखें, सन्दर्भ लिखना अनिवार्य है ।

9. (i). निम्नलिखित लोकोक्ति का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए : अन्त भला तो सब भला

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है, जिसका प्रयोग किसी कार्य के परिणाम के महत्व को दर्शाने के लिए किया जाता है ।

इसका भाव यह है कि यदि किसी कार्य का अंत या परिणाम अच्छा हो, तो उस कार्य के दौरान हुई कठिनाइयों और गलतियों को भुला दिया जाता है ।

Step 2 : Detailed Explanation :

अर्थ : परिणाम अच्छा हो जाए, तो सब कुछ अच्छा माना जाता है । (If the outcome is good, all is well.)

वाक्य प्रयोग :

वार्षिक परीक्षा के लिए रमेश ने दिन-रात एक कर दिए, यद्यपि बीच में वह बीमार भी रहा, किन्तु जब वह कक्षा में प्रथम आया तो सबने कहा कि अन्त भला तो सब भला ।

Step 3 : Final Answer :

अतः, इस लोकोक्ति का अर्थ है कि कार्य का सफल समापन ही मायने रखता है, और उपरोक्त वाक्य इसका सटीक प्रयोग दर्शाता है ।

Quick Tip

लोकोक्तियों का प्रयोग करते समय यह सुनिश्चित करें कि वाक्य का संदर्भ लोकोक्ति के भाव को पूरी तरह से स्पष्ट कर रहा हो । लोकोक्तियाँ अक्सर जीवन के अनुभव पर आधारित होती हैं, इसलिए वाक्य भी व्यावहारिक होना चाहिए ।

9. (ii). निम्नलिखित लोकोक्ति का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए : घी का लड्डू टेढ़ा भला

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह लोकोक्ति सिखाती है कि किसी वस्तु के गुणों को उसके बाहरी रूप से अधिक महत्व देना चाहिए । इसका भाव यह है कि यदि कोई वस्तु लाभदायक है, तो उसमें थोड़े-बहुत अवगुण या कमी होने पर भी वह स्वीकार्य होती है ।

Step 2 : Detailed Explanation :

अर्थ : काम की या लाभदायक वस्तु यदि सुन्दर न भी हो तो भी अच्छी होती है ।

वाक्य प्रयोग :

सरकारी नौकरी में भले ही थोड़ी दौड़-धूप ज्यादा हो, पर भविष्य सुरक्षित रहता है, इसीलिए कहते हैं कि घी का लड्डू टेढ़ा भला ।

Step 3 : Final Answer :

इस लोकोक्ति का अर्थ है कि गुणवान वस्तु का रूप-रंग मायने नहीं रखता, और दिया गया वाक्य इसके प्रयोग को सही ढंग से दर्शाता है ।

Quick Tip

इस प्रकार की लोकोक्तियों का प्रयोग करते समय तुलना का भाव स्पष्ट होना चाहिए । वाक्य में यह दिखना चाहिए कि किसी कमी के बावजूद किसी अच्छी चीज़ को क्यों चुना जा रहा है ।

9. (iii). निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए : आग बबूला होना

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

'आग बबूला होना' एक प्रचलित मुहावरा है जिसका प्रयोग अत्यधिक क्रोध की भावना को व्यक्त करने के लिए किया जाता है ।

यह किसी व्यक्ति के गुस्से की चरम अवस्था को दर्शाता है ।

Step 2 : Detailed Explanation :

अर्थ : अत्यधिक क्रोधित होना या बहुत गुस्सा करना ।

वाक्य प्रयोग :

जब छोटे भाई ने खेलने में मोहन का नया बल्ला तोड़ दिया, तो मोहन आग बबूला हो गया ।

Step 3 : Final Answer :

अतः, मुहावरे 'आग बबूला होना' का सही अर्थ 'अत्यधिक क्रोधित होना' है और इसका वाक्य प्रयोग ऊपर दर्शाया गया है ।

Quick Tip

मुहावरे का वाक्य में प्रयोग करते समय यह ध्यान रखें कि वाक्य सरल और स्पष्ट हो । वाक्य ऐसा होना चाहिए जिससे मुहावरे का अर्थ अपने आप स्पष्ट हो जाए । वाक्य में मुहावरे का प्रयोग करें, उसके अर्थ का नहीं ।

9. (iv). निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए : टेढ़ी खीर होना**Solution :****Step 1 : Understanding the Concept :**

यह मुहावरा किसी कार्य की कठिनाई के स्तर को बताने के लिए प्रयोग होता है ।

'टेढ़ी खीर' का मतलब है कि कोई काम बहुत मुश्किल है और उसे आसानी से पूरा नहीं किया जा सकता ।

Step 2 : Detailed Explanation :

अर्थ : बहुत कठिन कार्य होना ।

वाक्य प्रयोग :

आज के प्रतिस्पर्धा के युग में आई.ए.एस. (IAS) की परीक्षा पास करना टेढ़ी खीर है ।

Step 3 : Final Answer :

अतः, 'टेढ़ी खीर होना' का अर्थ है 'कठिन कार्य' और उपरोक्त वाक्य इस मुहावरे के प्रयोग का एक उपयुक्त उदाहरण है ।

Quick Tip

जब किसी मुहावरे का अर्थ 'कठिन कार्य' हो, तो वाक्य में किसी चुनौतीपूर्ण लक्ष्य या कार्य का उल्लेख करें, जैसे कोई प्रतियोगी परीक्षा, कोई जटिल समस्या या कोई बड़ा प्रोजेक्ट ।

11. (क) (i). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए :
कृत – कृति

- (A) रचना – पुस्तक
- (B) किया हुआ – रचना
- (C) कार्य – निर्मित
- (D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer : (B) किया हुआ – रचना

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न 'शब्द-युग्म' (श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द) पर आधारित है।

ये ऐसे शब्द होते हैं जो सुनने में लगभग एक जैसे लगते हैं, परन्तु उनके अर्थों में भिन्नता होती है। हमें 'कृत' और 'कृति' शब्दों के सही अर्थ वाले विकल्प का चयन करना है।

Step 2 : Detailed Explanation :

आइए दोनों शब्दों के अर्थों का विश्लेषण करें :

1. कृत (Krit) : इस शब्द का अर्थ है 'किया हुआ' (done) या 'रचा हुआ'।

यह किसी कार्य के सम्पन्न होने का सूचक है। जैसे - 'कृतज्ञ' (किए हुए उपकार को मानने वाला)।

2. कृति (Kriti) : इस शब्द का अर्थ है 'रचना' (a creation or composition)।

यह किसी साहित्यिक, कलात्मक या रचनात्मक कार्य को दर्शाता है। जैसे - 'गोदान' मुंशी प्रेमचंद की एक अमर कृति है।

विकल्पों का मूल्यांकन करने पर :

(A) रचना – पुस्तक : 'कृत' का अर्थ 'रचना' नहीं है।

(B) किया हुआ – रचना : यह विकल्प दोनों शब्दों के अर्थों को सही क्रम में प्रस्तुत करता है।

(C) कार्य – निर्मित : 'कृत' का अर्थ 'किया हुआ' होता है, 'कार्य' नहीं।

(D) इनमें से कोई नहीं : यह विकल्प गलत है क्योंकि विकल्प (B) सही है।

Step 3 : Final Answer :

अतः, 'कृत' का सही अर्थ 'किया हुआ' और 'कृति' का सही अर्थ 'रचना' है।

इसलिए, विकल्प (B) सही उत्तर है।

Quick Tip

शब्द-युग्मों के प्रश्नों को हल करने के लिए प्रत्येक शब्द के अर्थ को ध्यान से समझें। विकल्पों में शब्दों का क्रम भी महत्वपूर्ण होता है। जिस क्रम में प्रश्न में शब्द दिए गए हैं, उसी क्रम में उनके अर्थ होने चाहिए।

11. (क) (ii). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए :
श्रवण – श्रमण

- (A) सुनना – भ्रमण
- (B) भिक्षु – कर्ण
- (C) कान – भिक्षु
- (D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer : (C) कान – भिक्षु

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

इस प्रश्न में 'श्रवण' और 'श्रमण' शब्द-युग्म का सही अर्थ चुनना है।
ये शब्द उच्चारण में समान लगते हैं लेकिन इनके अर्थ पूरी तरह से भिन्न हैं।

Step 2 : Detailed Explanation :

दोनों शब्दों के अर्थ इस प्रकार हैं :

1. श्रवण (Shravan) : इस शब्द का अर्थ है 'सुनना' या सुनने का अंग अर्थात् 'कान'।
2. श्रमण (Shraman) : इस शब्द का अर्थ है 'संन्यासी' या 'बौद्ध भिक्षु'।

अब विकल्पों का विश्लेषण करते हैं :

- (A) सुनना – भ्रमण : 'सुनना' सही है, लेकिन 'श्रमण' का अर्थ 'भ्रमण' (धूमना) नहीं होता।
- (B) भिक्षु – कर्ण : इसमें अर्थ तो सही हैं ('कर्ण' का अर्थ कान होता है), परन्तु उनका क्रम गलत है। 'श्रवण' का अर्थ पहले और 'श्रमण' का बाद में होना चाहिए।
- (C) कान – भिक्षु : यह विकल्प दोनों शब्दों के अर्थ ('श्रवण' = कान, 'श्रमण' = भिक्षु) को सही क्रम में दर्शाता है।
- (D) इनमें से कोई नहीं : यह गलत है क्योंकि विकल्प (C) सही है।

Step 3 : Final Answer :

'श्रवण' का अर्थ 'कान' और 'श्रमण' का अर्थ 'भिक्षु' होता है।
अतः, विकल्प (C) सही उत्तर है।

Quick Tip

'ण' और 'म' जैसे वर्णों के अंतर पर ध्यान दें, क्योंकि ये शब्दों के अर्थ को पूरी तरह बदल सकते हैं, जैसे 'श्रमण' (भिक्षु) और 'भ्रमण' (घूमना) ।

11. (ख). निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए :
(i) नग, (ii) नाग, (iii) द्विज, (iv) पवन

Solution for (iii) द्विज :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न 'अनेकार्थी शब्द' से संबंधित है ।

अनेकार्थी शब्द वे होते हैं जिनका प्रयोग विभिन्न प्रसंगों में भिन्न-भिन्न अर्थों में किया जा सकता है । हमें 'द्विज' शब्द के दो अलग-अलग अर्थ लिखने हैं ।

Step 2 : Detailed Explanation :

'द्विज' का शाब्दिक अर्थ है 'जिसका जन्म दो बार हुआ हो' ।

इस आधार पर इसके विभिन्न अर्थ निकलते हैं :

1. ब्राह्मण : पहला जन्म माता के गर्भ से और दूसरा यज्ञोपवीत संस्कार से माना जाता है ।
2. पक्षी : पहला जन्म अंडे के रूप में और दूसरा अंडे से बाहर निकलने पर होता है ।
3. दाँत : मनुष्य के दाँत भी जीवन में दो बार निकलते हैं - पहले दूध के दाँत, फिर स्थायी दाँत ।

Step 3 : Final Answer :

'द्विज' शब्द के दो अर्थ हैं : पक्षी और ब्राह्मण ।

Quick Tip

अनेकार्थी शब्दों की तैयारी के लिए 'कनक', 'अम्बर', 'कर', 'नाग', 'द्विज' जैसे महत्वपूर्ण शब्दों के विभिन्न अर्थों को याद कर लें, क्योंकि ये अक्सर परीक्षाओं में पूछे जाते हैं ।

11. (ग) (i). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द चयन करके लिखिए :
ईश्वर में विश्वास करने वाला

- (A) नास्तिक
- (B) आस्तिक
- (C) अजर
- (D) अमर

Correct Answer : (B) आस्तिक

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

इस प्रश्न में दिए गए वाक्यांश 'ईश्वर में विश्वास करने वाला' के लिए एक उपयुक्त शब्द चुनना है। यह 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' का प्रश्न है।

Step 2 : Detailed Explanation :

आइए सभी विकल्पों के अर्थ देखें :

- (A) नास्तिक : जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता।
- (B) आस्तिक : जो ईश्वर में विश्वास करता है।
- (C) अजर : जो कभी बूढ़ा न हो।
- (D) अमर : जो कभी मरे नहीं।

दिए गए वाक्यांश का सही अर्थ विकल्प (B) से मिलता है।

Step 3 : Final Answer :

'ईश्वर में विश्वास करने वाला' व्यक्ति आस्तिक कहलाता है।

Quick Tip

'आस्तिक' और 'नास्तिक' एक-दूसरे के विलोम शब्द हैं और अक्सर परीक्षाओं में पूछे जाते हैं। इन्हें याद रखने के लिए 'न' से 'नास्तिक' और 'नहीं' को जोड़ सकते हैं।

11. (ग) (ii). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द चयन करके लिखिए :
जो नष्ट होने वाला हो

- (A) नश्वर
- (B) अविनाशी
- (C) अकिंचन
- (D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer : (A) नश्वर

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यहाँ वाक्यांश 'जो नष्ट होने वाला हो' के लिए एक शब्द का चयन करना है।

Step 2 : Detailed Explanation :

विकल्पों के अर्थ :

- (A) नश्वर : जो नष्ट हो जाने वाला हो, नाशवान ।
- (B) अविनाशी : जिसका कभी विनाश न हो, जो नष्ट न होने वाला हो ।
- (C) अकिंचन : जिसके पास कुछ भी न हो, दरिद्र ।
- (D) इनमें से कोई नहीं : यह गलत है क्योंकि सही उत्तर मौजूद है ।

वाक्यांश का अर्थ 'नष्ट हो जाने वाला' है, जो 'नश्वर' शब्द के अर्थ से मेल खाता है ।

Step 3 : Final Answer :

जो वस्तु नष्ट होने वाली हो, उसे नश्वर कहते हैं । जैसे, "यह शरीर नश्वर है ।"

Quick Tip

'नश्वर' और 'अविनाशी' परस्पर विलोम शब्द हैं । 'नश्वर' का संबंध संसार की नाशवान वस्तुओं से है, जबकि 'अविनाशी' का प्रयोग अक्सर आत्मा या ईश्वर के लिए किया जाता है ।

11. (घ). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

Solution :

अशुद्ध वाक्य : मोहन ने आलमारी खरीदा ।

शुद्ध वाक्य : मोहन ने आलमारी खरीदी ।

स्पष्टीकरण :

इस वाक्य में लिंग-संबंधी अशुद्धि है ।

'आलमारी' एक स्त्रीलिंग शब्द है, इसलिए क्रिया भी स्त्रीलिंग ('खरीदी') होनी चाहिए, न कि पुल्लिंग ('खरीदा') ।

Solution for (iv) :

अशुद्ध वाक्य : पक्षी पेड़ में है ।

शुद्ध वाक्य : पक्षी पेड़ पर है ।

स्पष्टीकरण :

इस वाक्य में कारक-संबंधी अशुद्धि है ।

पक्षी पेड़ के 'अंदर' (में) नहीं, बल्कि पेड़ के 'ऊपर' (पर) बैठते हैं ।

अतः 'में' के स्थान पर 'पर' कारक चिह्न का प्रयोग होगा ।

Quick Tip

वाक्य शुद्धि के प्रश्नों में लिंग, वचन, कारक और क्रिया के सही प्रयोग पर विशेष ध्यान दें। वाक्य को बोलकर देखें, इससे कई बार अशुद्धि आसानी से पकड़ में आ जाती है।

12. (क). 'श्रृंगार' अथवा 'वीर रस' का लक्षण लिखते हुए एक उदाहरण लिखिए।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न काव्य में 'रस' से संबंधित है।

हमें दिए गए दो रसों (श्रृंगार अथवा वीर) में से किसी एक का लक्षण (परिभाषा) और एक उदाहरण लिखना है।

यहाँ हम वीर रस का समाधान प्रस्तुत कर रहे हैं।

Step 2 : Detailed Explanation :

लक्षण (परिभाषा) :

जब युद्ध, दान, धर्म या दया आदि को करने के लिए मन में जो 'उत्साह' का भाव उत्पन्न होता है, और जब यह उत्साह नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भावों से पुष्ट होता है, तब वीर रस की निष्पत्ति होती है।

स्थायी भाव : उत्साह

उदाहरण :

बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

स्पष्टीकरण :

इस उदाहरण में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का वर्णन है, जिसे पढ़कर मन में उत्साह का भाव उत्पन्न होता है।

यहाँ स्थायी भाव 'उत्साह' है, आलंबन विभाव 'शत्रु' हैं, और रानी के पराक्रम का वर्णन उद्दीपन विभाव है। यह सब मिलकर वीर रस को अभिव्यक्त करते हैं।

Step 3 : Final Answer :

उपरोक्त परिभाषा और उदाहरण वीर रस का सम्पूर्ण परिचय देते हैं।

संक्षेप में, हृदय में स्थित उत्साह नामक स्थायी भाव ही वीर रस में परिणत होता है।

Quick Tip

परीक्षा में रस का लक्षण लिखते समय, उसके 'स्थायी भाव' का उल्लेख अवश्य करें, क्योंकि यह रस का मूल आधार होता है। एक सरल और प्रसिद्ध उदाहरण याद रखें ताकि आप उसे आसानी से लिख सकें।

12. (ख). 'रूपक' अथवा 'अनुप्रास' अलंकार का लक्षण लिखते हुए एक उदाहरण लिखिए।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न काव्य के 'अलंकार' प्रकरण से है।

अलंकार काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व होते हैं।

हमें 'रूपक' अथवा 'अनुप्रास' में से किसी एक अलंकार का लक्षण और उदाहरण देना है।

यहाँ अनुप्रास अलंकार का समाधान दिया जा रहा है।

Step 2 : Detailed Explanation :

लक्षण (परिभाषा) :

जब किसी काव्य पंक्ति में किसी एक व्यंजन वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है, तो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

'आवृत्ति' का अर्थ है किसी वर्ण का बार-बार आना।

उदाहरण :

तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।

स्पष्टीकरण :

इस काव्य पंक्ति में 'त' वर्ण की आवृत्ति अनेक बार (तरनि, तनूजा, तट, तमाल, तरुवर) हुई है।

वर्णों की इस पुनरावृत्ति के कारण यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

Step 3 : Final Answer :

अतः, जहाँ एक ही वर्ण बार-बार दोहराया जाए, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है, जैसा कि दिए गए उदाहरण में स्पष्ट है।

Quick Tip

अनुप्रास अलंकार को पहचानना सबसे सरल है। किसी भी पंक्ति में यदि कोई अक्षर (विशेषकर शब्द का पहला अक्षर) बार-बार दिखे, तो वहाँ अनुप्रास अलंकार होने की प्रबल संभावना होती है।

12. (ग). 'चौपाई' अथवा 'दोहा' छन्द का लक्षण (मात्रा सहित) लिखकर एक उदाहरण लिखिए ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह प्रश्न 'छन्द' से संबंधित है ।

छन्द, काव्य में मात्रा और वर्णों की एक विशेष व्यवस्था है जो उसे लय प्रदान करती है ।
हमें 'चौपाई' अथवा 'दोहा' में से किसी एक छंद का लक्षण मात्रा सहित और उदाहरण लिखना है ।
यहाँ दोहा छन्द का समाधान प्रस्तुत है ।

Step 2 : Detailed Explanation :

लक्षण (परिभाषा) :

यह एक अर्धसम मात्रिक छन्द है । इसमें चार चरण होते हैं ।
इसके पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं ।
इसके दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं ।
इसके सम चरणों (दूसरे और चौथे) के अंत में गुरु-लघु (S I) आना चाहिए ।

उदाहरण (मात्रा सहित) :

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि ।
बरनउँ रघुबर विमल जसु, जो दायक फल चारि ॥

मात्रा गणना :

पहला चरण : श्री (S) गु (I) रु (I) च (I) र (I) न (I) स (I) रो (S) ज (I) र (I) ज (I) → 2+1+1+1+1+1+1+2+1+1+1
= 13 मात्राएँ

दूसरा चरण : नि (I) ज (I) म (I) न (I) मु (I) कु (I) र (I) सु (I) धा (S) रि (I) → 1+1+1+1+1+1+1+1+2+1
= 11 मात्राएँ

Step 3 : Final Answer :

उपरोक्त लक्षण और उदाहरण मात्रा गणना सहित दोहा छंद को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हैं ।

Quick Tip

मात्रा की गणना का अभ्यास अवश्य करें । लघु स्वर (अ, इ, उ) और चंद्रबिंदु की 1 मात्रा (I) होती है ।
दीर्घ स्वर (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ) और अनुस्वार/विसर्ग की 2 मात्राएँ (S) होती हैं ।

13. विद्यालय में रिक्त लिपिक पद पर नियुक्ति हेतु विद्यालय-प्रबंधक के नाम आवेदन-पत्र लिखिए ।

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह एक औपचारिक पत्र (आवेदन-पत्र) है ।

इसका उद्देश्य विद्यालय प्रबंधक को लिपिक (Clerk) के पद के लिए अपनी उम्मीदवारी प्रस्तुत करना है ।

पत्र की भाषा विनम्र, सटीक और व्यावसायिक होनी चाहिए ।

Step 2 : Key Formula or Approach (पत्र का पूरारूप) :

1. प्रेषक का पता (वैकल्पिक) : पत्र के ऊपर बाईं ओर लिखा जा सकता है ।

2. सेवा में : पत्र प्राप्त करने वाले अधिकारी का पद और पता ।

3. विषय : पत्र लिखने का कारण संक्षिप्त में ।

4. संबोधन : जैसे 'महोदय' या 'महोदया' ।

5. पत्र का मुख्य भाग : - पहला अनुच्छेद : पद के बारे में जानकारी का स्रोत और आवेदन की प्रस्तुति ।

- दूसरा अनुच्छेद : अपनी शैक्षणिक योग्यता और अनुभव का विवरण ।

- तीसरा अनुच्छेद : पद के लिए अपनी उपयुक्तता और कार्य के प्रति निष्ठा का आश्वासन ।

6. समापन : धन्यवाद ज्ञापन ।

7. स्वनिर्देश : 'भवदीय' या 'प्रार्थी' ।

8. हस्ताक्षर और नाम : आवेदक का पूरा नाम ।

9. संलग्नक : संलग्न किए गए प्रमाण-पत्रों की सूची ।

10. दिनांक : पत्र लिखने की तिथि ।

Step 3 : Detailed Explanation (आवेदन-पत्र) :

सेवा में,

श्रीमान प्रबंधक महोदय,

डी.ए.वी. इंटर कॉलेज,

सिविल लाइन्स, कानपुर ।

विषय : लिपिक पद पर नियुक्ति हेतु आवेदन-पत्र ।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मुझे दिनांक 2 सितंबर, 2025 के 'दैनिक जागरण' समाचार-पत्र में प्रकाशित विज्ञापन के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि आपके प्रतिष्ठित विद्यालय में लिपिक का एक पद रिक्त है । मैं इस पद के लिए अपनी उम्मीदवारी प्रस्तुत करना चाहता हूँ ।

मेरी शैक्षणिक योग्यताएँ इस प्रकार हैं : मैंने उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् से इंटरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है । इसके अतिरिक्त, मैंने कंप्यूटर में एक वर्षीय डिप्लोमा (DCA)

भी प्राप्त किया है और मुझे हिंदी व अंग्रेजी टाइपिंग का अच्छा ज्ञान है। मुझे एक स्थानीय फर्म में दो वर्षों तक कार्यालय सहायक के रूप में कार्य करने का अनुभव भी है।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि मुझे इस पद पर सेवा करने का अवसर प्रदान किया गया, तो मैं अपने सभी कर्तव्यों का पालन पूरी लगन, निष्ठा और ईमानदारी से करूँगा तथा अपने कार्य से आपको कभी शिकायत का अवसर नहीं दूँगा।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि मेरी योग्यताओं पर विचार करते हुए मुझे इस पद पर नियुक्त करने की कृपा करें।

धन्यवाद !

संलग्नक :

1. समस्त शैक्षणिक योग्यताओं की प्रमाणित प्रतिलिपियाँ।
2. अनुभव प्रमाण-पत्र की प्रतिलिपि।
3. चरित्र प्रमाण-पत्र।

भवदीय,
क ख ग
आवास विकास,
कानपुर।
दिनांक : 2 सितंबर, 2025

Step 4 : Final Answer :

उपरोक्त पत्र लिपिक पद पर आवेदन के लिए एक सही और पूर्ण प्रारूप है।

Quick Tip

आवेदन-पत्र लिखते समय विषय (Subject) को हमेशा स्पष्ट और संक्षिप्त रखें। अपनी योग्यताओं का उल्लेख आत्मविश्वास के साथ करें। पत्र में अनावश्यक विस्तार से बचें और भाषा को औपचारिक बनाए रखें। यदि प्रश्न में नाम और पता न दिया हो, तो 'क ख ग' और काल्पनिक पते का प्रयोग करें।

14. (i). निम्नलिखित विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए :
आतंकवाद की समस्या – कारण और निवारण

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह विषय एक वैश्विक समस्या 'आतंकवाद' पर केंद्रित है।

इस निबंध में हमें आतंकवाद के अर्थ, उसके प्रमुख कारणों, समाज और देश पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों तथा इस समस्या के समाधान के उपायों पर विस्तार से चर्चा करनी है।

Step 2 : Key Formula or Approach (निबंध की रूपरेखा) :

1. प्रस्तावना : आतंकवाद का परिचय, एक विश्वव्यापी समस्या के रूप में।
2. आतंकवाद का अर्थ : हिंसा, भय और आतंक के माध्यम से अपनी मांगों को मनवाना।
3. आतंकवाद के कारण : - राजनीतिक कारण (सत्ता की प्राप्ति)।
 - आर्थिक कारण (गरीबी, बेरोजगारी)।
 - धार्मिक कट्टरता और अलगाववाद।
 - सीमा पार से समर्थन।
4. भारत में आतंकवाद और उसके प्रभाव : देश की एकता, अखंडता और अर्थव्यवस्था पर प्रहार।
5. निवारण के उपाय (समाधान) : - कठोर कानून और मजबूत सुरक्षा बल।
 - अंतर्राष्ट्रीय सहयोग।
 - शिक्षा और रोजगार का प्रसार।
 - युवाओं को सही दिशा-निर्देश।
6. उपसंहार : आतंकवाद मानवता के लिए कलंक है और इसे जड़ से समाप्त करने के लिए वैश्विक एकता की आवश्यकता है।

Step 3 : Detailed Explanation (निबंध) :

प्रस्तावना

आतंकवाद आज विश्व के समक्ष खड़ी सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है। यह एक ऐसी वैश्विक समस्या है, जिससे लगभग हर देश प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित है। आतंकवाद का अर्थ केवल हिंसा फैलाना नहीं, बल्कि समाज में भय और असुरक्षा का वातावरण बनाकर देश की शांति और स्थिरता को भंग करना है।

आतंकवाद के कारण

आतंकवाद के पनपने के पीछे कोई एक कारण नहीं, बल्कि अनेक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक कारण जिम्मेदार होते हैं। गरीबी, बेरोजगारी और अशिक्षा से त्रस्त युवा आसानी से गुमराह होकर इन संगठनों का हिस्सा बन जाते हैं। कुछ अलगाववादी समूह अपनी राजनीतिक मांगों को मनवाने के लिए हिंसा का सहारा लेते हैं, तो वहीं धार्मिक कट्टरता भी आतंकवाद को बढ़ावा देने का एक प्रमुख कारण है। कई बार पड़ोसी देशों द्वारा प्रायोजित आतंकवाद भी देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा बन जाता है।

भारत पर प्रभाव और निवारण के उपाय

भारत दशकों से सीमा पार आतंकवाद का दंश झेल रहा है। मुंबई, दिल्ली और पुलवामा जैसे आतंकी हमलों ने देश की आत्मा पर गहरे घाव दिए हैं। यह न केवल निर्दोष लोगों की जान लेता है, बल्कि देश के आर्थिक विकास और सामाजिक सद्भाव को भी बाधित करता है।

इस समस्या से निपटने के लिए एक बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है। सरकार को आतंकवाद के विरुद्ध कठोर कानून बनाने चाहिए और सुरक्षा बलों को आधुनिक हथियारों से लैस करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी देशों को मिलकर आतंकवाद के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा बनाना होगा। इसके साथ ही, देश के युवाओं को शिक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान करके उन्हें गुमराह होने से बचाना

भी अत्यंत आवश्यक है।

उपसंहार

आतंकवाद मानवता के नाम पर एक कलंक है। यह एक ऐसा जहर है जो किसी एक देश को नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को नष्ट कर सकता है। अतः, सरकारों के साथ-साथ आम नागरिकों को भी सतर्क रहकर इस अमानवीय कृत्य के विरुद्ध आवाज उठानी चाहिए। आपसी भाईचारे और वैश्विक सहयोग से ही इस समस्या को जड़ से समाप्त किया जा सकता है।

Quick Tip

निबंध लिखते समय एक रूपरेखा (outline) अवश्य बना लें। इससे आपके विचार व्यवस्थित रहते हैं और आप विषय से भटकते नहीं हैं। प्रस्तावना और उपसंहार को प्रभावशाली बनाने का प्रयास करें।

14. (ii). निम्नलिखित विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए :
अन्तरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह निबंध भारत की अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में उपलब्धियों पर केंद्रित है। इसमें हमें भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की स्थापना से लेकर चंद्रयान और मंगलयान जैसी ऐतिहासिक सफलताओं और भविष्य की योजनाओं का वर्णन करना है।

Step 2 : Key Formula or Approach (निबंध की रूपरेखा) :

1. प्रस्तावना : भारत की अंतरिक्ष यात्रा का परिचय और इसरो की भूमिका।
2. भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत : डॉ. विक्रम साराभाई का योगदान।
3. प्रमुख उपलब्धियाँ : - पहला उपग्रह 'आर्यभट्ट'।
- चंद्रयान-1, 2 और 3 (चंद्रमा पर सफल लैंडिंग)।
- मंगलयान (पहले ही प्रयास में सफलता)।
- एक साथ 104 उपग्रहों का प्रक्षेपण (विश्व रिकॉर्ड)।
4. भविष्य की योजनाएँ : गगनयान मिशन (मानव अंतरिक्ष उड़ान), आदित्य-L1 (सूर्य का अध्ययन)।
5. महत्व और प्रभाव : रक्षा, संचार, मौसम विज्ञान और राष्ट्रीय गौरव में वृद्धि।
6. उपसंहार : भारत का एक वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति के रूप में उदय।

Step 3 : Detailed Explanation (निबंध) :

प्रस्तावना

"सपनों को सितारों तक पहुँचाने" की जो यात्रा भारत ने दशकों पहले शुरू की थी, आज वह दुनिया

के लिए एक मिसाल बन चुकी है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अथक प्रयासों से भारत ने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में विकसित देशों के एकाधिकार को चुनौती दी है और अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

सफलताओं का स्वर्णिम इतिहास

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की नींव डॉ. विक्रम साराभाई ने रखी थी। 1975 में अपने पहले उपग्रह 'आर्यभट्ट' के सफल प्रक्षेपण के साथ भारत ने अंतरिक्ष युग में प्रवेश किया। इसके बाद भारत ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। चंद्रयान-1 ने चाँद पर पानी की खोज करके दुनिया को चकित कर दिया, तो वहीं मंगलयान मिशन ने पहले ही प्रयास में मंगल की कक्षा में पहुँचकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। हाल ही में, चंद्रयान-3 की चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल सॉफ्ट-लैंडिंग ने भारत को ऐसा करने वाला दुनिया का पहला देश बना दिया है। यह सफलता भारत की तकनीकी क्षमता और वैज्ञानिक दृढ़ संकल्प का प्रतीक है।

भविष्य की ओर बढ़ते कदम

भारत की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षाएँ यहीं नहीं रुकतीं। 'गगनयान' मिशन के तहत भारत अपने अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में भेजने की तैयारी कर रहा है। 'आदित्य-L1' मिशन सूर्य के रहस्यों का पता लगाएगा। ये मिशन न केवल भारत की वैज्ञानिक क्षमता को बढ़ाएँगे, बल्कि संचार, रक्षा और मौसम पूर्वानुमान जैसे क्षेत्रों में भी देश को आत्मनिर्भर बनाएँगे।

उपसंहार

कम बजट में बड़ी सफलताएँ हासिल करना इसरो की पहचान बन चुकी है। आज भारत अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। भारत के ये बढ़ते कदम न केवल देश के युवाओं को विज्ञान के प्रति प्रेरित कर रहे हैं, बल्कि विश्व पटल पर 'जय विज्ञान, जय अनुसंधान' के नारे को साकार भी कर रहे हैं।

Quick Tip

विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जुड़े विषयों पर निबंध लिखते समय हालिया घटनाओं और सटीक आंकड़ों (जैसे चंद्रयान-3 की सफलता) का उल्लेख अवश्य करें। यह आपके निबंध को अधिक प्रामाणिक और प्रभावशाली बनाता है।

14. (iii). निम्नलिखित विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए :
बढ़ती जनसंख्या और रोजगार की समस्या

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह विषय भारत की दो गंभीर और एक-दूसरे से जुड़ी समस्याओं - जनसंख्या वृद्धि और बेरोजगारी - पर आधारित है।

निबंध में हमें जनसंख्या वृद्धि के कारणों, इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न रोजगार संकट और इस समस्या

के समाधान के उपायों पर चर्चा करनी है ।

Step 2 : Key Formula or Approach (निबंध की रूपरेखा) :

1. प्रस्तावना : जनसंख्या वृद्धि का परिचय और इसका रोजगार से संबंध ।
2. जनसंख्या वृद्धि के कारण : अशिक्षा, गरीबी, सामाजिक मान्यताएँ, चिकित्सा सुविधाओं में सुधार ।
3. रोजगार पर प्रभाव : - संसाधनों पर बढ़ता दबाव ।
- नौकरी के सीमित अवसर और बढ़ती प्रतिस्पर्धा ।
- निम्न जीवन स्तर और गरीबी में वृद्धि ।
4. समस्या के समाधान के उपाय : - जनसंख्या नियंत्रण कानून और परिवार नियोजन कार्यक्रम ।
- कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा ।
- औद्योगीकरण और नए रोजगार के अवसरों का सृजन ।
- स्वरोजगार के लिए प्रोत्साहन ।
5. उपसंहार : संतुलित जनसंख्या और सुनियोजित विकास ही उज्ज्वल भविष्य का आधार है ।

Step 3 : Detailed Explanation (निबंध) :

प्रस्तावना

किसी भी देश की जनसंख्या उसकी सबसे बड़ी ताकत होती है, लेकिन जब यह अनियंत्रित रूप से बढ़ने लगती है, तो यह एक गंभीर समस्या का रूप ले लेती है । भारत आज दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन चुका है, और इस जनसंख्या विस्फोट का सीधा प्रभाव देश के संसाधनों और रोजगार के अवसरों पर पड़ रहा है, जिससे बेरोजगारी की समस्या विकराल होती जा रही है ।

समस्या का स्वरूप और कारण

जनसंख्या वृद्धि के पीछे कई कारण हैं, जिनमें अशिक्षा, गरीबी, पुत्र-प्राप्ति की सामाजिक चाह और बेहतर चिकित्सा सुविधाओं के कारण घटती मृत्यु दर प्रमुख हैं । जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती है, प्राकृतिक संसाधनों जैसे भूमि, जल और भोजन पर दबाव बढ़ता है । साथ ही, उपलब्ध नौकरियों की संख्या जनसंख्या वृद्धि की दर से मेल नहीं खा पाती, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षित और अशिक्षित दोनों प्रकार के युवाओं में बेरोजगारी बढ़ती है । यह बेरोजगारी न केवल आर्थिक संकट पैदा करती है, बल्कि युवाओं में निराशा, हताशा और अपराध की प्रवृत्ति को भी जन्म देती है ।

समाधान की दिशा

इस दोहरी चुनौती से निपटने के लिए एक व्यापक रणनीति की आवश्यकता है । सबसे पहले, जनसंख्या नियंत्रण के लिए प्रभावी कानूनों और परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता अभियानों को सख्ती से लागू करना होगा । दूसरी ओर, रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए सरकार को औद्योगीकरण को बढ़ावा देना चाहिए । हमारी शिक्षा प्रणाली को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रखकर कौशल-आधारित और व्यावसायिक बनाना होगा, ताकि युवा नौकरी मांगने वाले नहीं, बल्कि नौकरी देने वाले बनें । 'स्किल इंडिया' और 'मेक इन इंडिया' जैसी पहल इस दिशा में सही कदम हैं ।

उपसंहार

बढ़ती जनसंख्या और बेरोजगारी एक-दूसरे से जुड़ी हुई समस्याएँ हैं । यदि हमें भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है, तो हमें जनसंख्या को स्थिर करने और अपने मानव संसाधन को कुशल बनाने पर ध्यान केंद्रित करना होगा । एक संतुलित जनसंख्या और कुशल युवा ही देश को प्रगति के पथ पर ले जा

सकते हैं ।

Quick Tip

समस्या-समाधान वाले निबंधों में, समस्या के हर पहलू (कारण, प्रभाव) का विश्लेषण करें और फिर व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करें । सरकारी योजनाओं और नीतियों का उल्लेख आपके उत्तर को और भी प्रभावी बना सकता है ।

14. (iv). निम्नलिखित विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए :
विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन का महत्त्व

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह विषय विद्यार्थी जीवन की नींव 'अनुशासन' के महत्त्व पर केंद्रित है ।

इस निबंध में हमें यह समझाना है कि अनुशासन क्या है और यह एक छात्र के चरित्र निर्माण, लक्ष्य प्राप्ति और सफल भविष्य के लिए क्यों आवश्यक है ।

Step 2 : Key Formula or Approach (निबंध की रूपरेखा) :

1. प्रस्तावना : अनुशासन का अर्थ और विद्यार्थी जीवन से इसका संबंध ।
2. अनुशासन का महत्त्व : - समय का सदुपयोग और समय-प्रबंधन ।
- चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्यों का विकास ।
- लक्ष्यों के प्रति एकाग्रता और सफलता की प्राप्ति ।
- शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार ।
3. अनुशासनहीनता के दुष्परिणाम : लक्ष्य से भटकाव, असफलता और चारित्रिक पतन ।
4. अनुशासन कैसे सीखें : आत्म-नियंत्रण, बड़ों का सम्मान, नियमों का पालन ।
5. उपसंहार : अनुशासित विद्यार्थी ही एक सफल नागरिक और सशक्त राष्ट्र का निर्माता होता है ।

Step 3 : Detailed Explanation (निबंध) :

प्रस्तावना

विद्यार्थी जीवन मानव जीवन की आधारशिला है, और इस आधारशिला को मजबूती प्रदान करने वाला तत्व 'अनुशासन' है । अनुशासन का अर्थ है नियमों का सही ढंग से पालन करना । यह वह शक्ति है जो एक विद्यार्थी को सही दिशा में ले जाती है और उसकी सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है ।

अनुशासन का महत्त्व

अनुशासन विद्यार्थी के जीवन में हर कदम पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । एक अनुशासित विद्यार्थी समय का मूल्य समझता है । वह अपनी दिनचर्या बनाता है और समय पर उठने, पढ़ने, खेलने और सोने जैसे सभी कार्यों को समय पर पूरा करता है । यह समय-प्रबंधन उसे परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त

करने में मदद करता है। अनुशासन से ही चरित्र का निर्माण होता है। विद्यार्थी में आज्ञाकारिता, विनम्रता, और कर्तव्यनिष्ठा जैसे गुण विकसित होते हैं।

इसके अतिरिक्त, अनुशासन विद्यार्थी को अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है। वह व्यर्थ के भटकावों से दूर रहता है और अपनी पूरी ऊर्जा अपनी पढ़ाई में लगाता है, जिससे सफलता निश्चित हो जाती है। अनुशासन केवल अकादमिक सफलता के लिए ही नहीं, बल्कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है।

अनुशासनहीनता के दुष्परिणाम

इसके विपरीत, अनुशासनहीन विद्यार्थी का जीवन दिशाहीन हो जाता है। वह समय का दुरुपयोग करता है, अपने कर्तव्यों से विमुख हो जाता है और अंततः असफलता का सामना करता है। अनुशासन की कमी उसे उद्वेग और गैर-जिम्मेदार बना देती है, जो उसके भविष्य के लिए घातक सिद्ध होता है।

उपसंहार

अंतः यह स्पष्ट है कि अनुशासन विद्यार्थी जीवन का प्राण है। यह वह स्वर्ण कुंजी है जो सफलता के हर द्वार को खोल सकती है। जो विद्यार्थी अनुशासन के महत्व को समझकर उसे अपने जीवन में अपना लेता है, वही भविष्य में एक आदर्श नागरिक बनकर परिवार, समाज और राष्ट्र का नाम रोशन करता है।

Quick Tip

इस प्रकार के विचारात्मक निबंधों में आप किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के कथन या सूक्ति (जैसे "अनुशासन ही सफलता की कुंजी है") से शुरुआत या अंत कर सकते हैं। यह आपके निबंध को अधिक प्रभावशाली बनाता है।

14. (v). निम्नलिखित विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए :
पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

Solution :

Step 1 : Understanding the Concept :

यह विषय आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता 'पर्यावरण संरक्षण' पर आधारित है। निबंध में हमें पर्यावरण का अर्थ, इसके प्रदूषित होने के कारण, मानव जीवन पर इसके दुष्प्रभाव और इसके संरक्षण के लिए किए जाने वाले उपायों पर प्रकाश डालना है।

Step 2 : Key Formula or Approach (निबंध की रूपरेखा) :

1. प्रस्तावना : पर्यावरण का अर्थ और जीवन के लिए इसका महत्व।
2. पर्यावरण प्रदूषण के कारण : - औद्योगीकरण और शहरीकरण।
 - वनों की अंधाधुंध कटाई।
 - वाहनों और कारखानों से निकलता धुआँ (वायु प्रदूषण)।
 - रासायनिक कचरे को नदियों में बहाना (जल प्रदूषण)।
3. दुष्प्रभाव : जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, प्राकृतिक आपदाएँ, नई बीमारियाँ।

4. **संरक्षण की आवश्यकता और उपाय :** - अधिक से अधिक वृक्षारोपण ।

- प्रदूषण नियंत्रण कानूनों का सख्ती से पालन ।
- नवीकरणीय ऊर्जा (सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा) का प्रयोग ।
- जल संरक्षण और प्लास्टिक का उपयोग बंद करना ।
- जन-जागरूकता अभियान ।

5. **उपसंहार :** 'स्वस्थ पर्यावरण, स्वस्थ जीवन' - पर्यावरण की रक्षा हमारा नैतिक और सामाजिक दायित्व है ।

Step 3 : Detailed Explanation (निबंध) :

प्रस्तावना

'पर्यावरण' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - 'परि' और 'आवरण', जिसका अर्थ है 'चारों ओर का घेरा' । हमारे चारों ओर जो कुछ भी है - हवा, पानी, मिट्टी, पेड़-पौधे, और जीव-जंतु - यह सब मिलकर हमारे पर्यावरण का निर्माण करते हैं । यह पर्यावरण ही हमारे जीवन का आधार है, लेकिन दुर्भाग्य से, मानव ने अपनी विकास की अंधी दौड़ में इसी जीवनदायी पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुँचाया है ।

पर्यावरण संकट के कारण और प्रभाव

आधुनिक युग में औद्योगीकरण और शहरीकरण ने पर्यावरण को सबसे अधिक क्षति पहुँचाई है । कार-खानों और वाहनों से निकलने वाले जहरीले धुएँ ने हमारी हवा को प्रदूषित कर दिया है । नदियों में बहाए जा रहे रासायनिक कचरे ने जल को विषैला बना दिया है । वनों की अंधाधुंध कटाई से वन्यजीवों का अस्तित्व खतरे में है और भूमि का संतुलन बिगड़ रहा है ।

इस प्रदूषण के भयानक परिणाम जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत में छेद और बाढ़, सूखा जैसी प्राकृतिक आपदाओं के रूप में हमारे सामने आ रहे हैं । यदि हमने समय रहते इस विनाश को नहीं रोका, तो पृथ्वी पर मानव जीवन का अस्तित्व ही संकट में पड़ जाएगा ।

संरक्षण की आवश्यकता और उपाय

आज पर्यावरण का संरक्षण केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि हमारी अनिवार्यता बन चुका है । हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाना होगा । हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे, क्योंकि वृक्ष ही पर्यावरण के रक्षक हैं । प्लास्टिक का उपयोग बंद करना होगा और जल की हर बूँद को सहेजना होगा । सरकारों को प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों के खिलाफ कठोर कदम उठाने होंगे और सौर ऊर्जा तथा पवन ऊर्जा जैसे स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देना होगा । सबसे महत्वपूर्ण है जन-जागरूकता ; जब तक हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी नहीं समझेगा, तब तक यह संकट दूर नहीं होगा ।

उपसंहार

हमारी पृथ्वी हमारी माता है और इसकी रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है । हमें यह याद रखना होगा कि हम प्रकृति से हैं, प्रकृति हमसे नहीं । एक स्वच्छ और हरा-भरा पर्यावरण ही आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारा सबसे बड़ा उपहार हो सकता है । आइए, हम सब मिलकर अपनी पृथ्वी को बचाने का संकल्प लें ।

Quick Tip

पर्यावरण जैसे विषयों पर निबंध लिखते समय, आप 'विश्व पर्यावरण दिवस' (5 जून) जैसे महत्वपूर्ण दिनों का उल्लेख कर सकते हैं। समस्या के साथ-साथ समाधान पर बराबर जोर देना चाहिए, जिससे आपका निबंध संतुलित और सकारात्मक लगे।
